धूप का टुकड़ा



राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

in the

धूप का टुकड़ा

अमृता प्रीतम

अनुवादक देविन्दर

मूल्य रु 30 00

प्रथम संस्करण 1966
द्वितीय संस्करण 1982

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
8 नेताजी सुभाष मार्ग नयी दिल्ली-110002

मुद्रक रुचिका प्रिंटर्स द्वारा गौतम आर्ट प्रेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

आवरण इमरोज

DHOOP KA TUKARAA
Poems *by* Amrita Pritam

भूमिका

अमृता प्रीतम की कविताओं में रमना, हृदय में कसकती व्यथा का घाव लेकर, प्रेम और सौंदर्य की धूपछांह वीथी में विचरने के समान है, जहां वियोग तथा अतृप्ति के तीखे, नुकीले कांटे भावना के सुकुमार चरणों को प्रेम के चंचल निर्मम स्वभाव के कारण, क्षत विक्षत करते रहते हैं। ऐसी गहरी, दर्द में डूबी, प्राणिक संवेदनाओं के गीत कम ही देखने को मिलते हैं। यौवन की गोपन आकांक्षा धरती की रज पर उतरना चाहती है और उसका प्रत्येक क्षण, जाने नियति के किस विधान से, चिनगारी बनकर, अबोध हृदय में उगे प्रणय तिनकों के स्वप्न नीड को राख कर देता है। जिस प्रकार कोयल और चातक प्रेम के पक्षी हैं, उसी प्रकार अमृताजी भी मुख्यत प्रणय तथा राग भावना की अनन्य गायिका हैं जिन्हें ग्रीक कवयित्री सफो की तरह प्रबल अतृप्त यौवन-आवेग नये-नये प्रणय संवेदनों में झकझोरता रहता है। वह प्रेम के वसन्त की दूत हैं और इस पृथ्वी पर जहां भी जाती हैं प्रेम की कभी न बुझनेवाली आग और सौंदर्य की स्वप्न-स्पर्श लपटें बरसाती जाती हैं। भाव स्वप्नों की सूक्ष्म काया में उनकी कविता मानवीय प्रणय वेदना का दुःसह भार तथा जीवन यथार्थ की अदम्य पुकार सँभाले हुए युग कदम तथा कटु अनुभूतियों के कंकड पत्थरों पर चलते, ठोकर खाते, जैसे, सौंदर्यचेतना में नये अधखुले क्षितिजों में मुक्त प्राण उडती हुई आगे बढती रहती है। उनके छोटे-छोटे तीव्र संवेदना भरे चरण नावक के तीरों की तरह मर्म में गम्भीर घाव करते हैं। आज के कवि-समीक्षकों के शब्दों में उन्होंने छककर क्षण को भोगा एवं जीवन को जिया है और उसका अपरिहार्य व्यथा रस अपनी कविता की अंजुलि में भर भरकर पिया है। अमृताजी धरती के जीवन के गीत भी गाती हैं। वह युग संघर्ष के प्रति प्रबुद्ध होने के कारण प्रगतिशील भावधारा से प्रेरित हैं। किन्तु प्रेम के प्रति एकाग्र समर्पण ही उनकी जीवन साधना तथा आत्म विकास का एकान्त पथ है।

शिल्प की दृष्टि से अमृताजी आधुनिक कला-बोध की कवयित्री हैं। उनके बिम्ब तथा प्रतीक उनके अत्यन्त निजी तथा अत्यन्त मौलिक हैं। उनकी भाव प्रक्रिया इतनी काव्यमयी होती है कि उनकी छन्द मुक्त पंक्तियां भी पढते ही कण्ठस्थ हो जाती हैं, जो गुण हिन्दी की नयी कविता से एकदम लुप्त होता जा रहा है। अमृताजी की बाह्य आकृति जितनी आकर्षक है अपने भीतर वह अपनी सूक्ष्म काव्य-काया में भी उतनी ही मनोरम है, ऐसा पक्षपात विधाता के यहां कम ही देखने को मिलता है।

उनकी कला-दृष्टि जिस वस्तु या दृश्य को भी स्पर्श करती है उसे गहरी काव्य-संवेदना की प्रक्रिया एवं उपकरणों में परिणत कर देती है। उनके लिए

संसार की समस्त वस्तुएं भावना के ढाँचे में ढली हैं। वह आकाशीय व्यापारों को भी घरेलू वातावरण में बाँधकर उन्हें हृदय के निकट ले आती हैं। धूप का छोटा सा टुकड़ा भी रहस्य में नहाये हुए बच्चे की गरम साँस बनकर उनकी हथेली थाम लेता है। आज के बौद्धिक काव्य तथा अमूर्त रचना के युग में ऐसी मूर्तामूर्त भावना गंधी शुद्ध कविता अन्यत्र देखने को नहीं मिलती है। प्रेम की तन्मय अनुभूति तथा सौंदर्य के पुलक स्पर्श से छूकर वे वर्तमान यन्त्र-युग के कुरूप उपादानों को भी काव्य की गरिमा तथा सम्मोहन प्रदान कर देती हैं। वैसे तो इस संग्रह की 75 प्रतिशत पंक्तियाँ उद्धृत करने योग्य हैं किन्तु मैं थोड़े से अवतरणों को यहाँ देकर अपने कथन का समर्थन करूँगा। स्मृति की प्रखर अनुभूति का एक चित्र है—

मैं दिल के कोने में बैठी हूँ
तुम्हारी याद इस तरह आयी
जैसे गीली लकड़ी में से
गाढ़ा कड़ुवा धुआँ उठे

कई कोयलों की तरह बिखरे हुए
कुछ बुझ गये कुछ बुझने से रह गये।

दैनन्दिन के सजीव गृहस्थी के व्यापारों के माध्यम से कैसी अकथनीय व्यथा की अभिव्यक्ति की गयी है। रोजी शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ हैं—

चाँद की चिमनी में से
सफेद गाढ़ा धुआँ उठता है —
सपने जैसे कई भट्टियाँ हैं
हर भट्टी में आग झोंकता हुआ
मेरा इश्क मजदूरी करता है।
मेरा मिलना ऐसा होता है
जैसे कोई हथेली पर
एक वक्त की रोजी रख दे।

युग के छोटे मोटे व्यापारों के भीतर से हृदय की कैसी टीस झलकती है। और भी देखिए—

रात कुड़ी ने दावत दी
सितारों के चावल फटक कर
यह देग किसने चढ़ा दी।

कैसी घरेलू तथा साथ ही कैसी नवीन और मौलिक कल्पना है। इसी प्रकार के इनके फुलके शब्दों में इस प्रणय व्यथा की चितेरी ने अनेक हृदयस्पर्शी चित्र अंकित किये हैं—

चाँद ने रात के बालों में
जैसे फूल टाँक दिया।

नींद के होठों से जैसे
सपने की महक आती है।

आज तारो ने फिर कहा
उम्र के महल मे अब भी
हुस्न के दीये जल रहे है
तू नही आया।

अथवा

जिसने अँधेरे के अलावा कभी कुछ नही बुना
वह मुहब्बत आज किरणें बुनकर दे गयी।

ऐसी अनेक कवित्वमयी मर्मस्पर्शिनी पक्तिया इन कविताओं मे बिखरी पड़ी हैं जो या तो प्रेम व्यथा मे कराहती है या भाव सौदर्य से रोमाचित सी लगती हैं। कवयित्री के ही शब्दो मे—

उम्र के कागज पर
तेरे इश्क ने अँगूठा लगाया
हिसाब कौन चुकायेगा

अमृताजी की यथार्थ-बोध से प्रेरित कविताएँ भी उनकी प्रणय गीतियो की तरह ही सशक्त तथा हृदय को छूनेवाली होती हैं—

लाश को एक लाश की भूख होती है
लाश की कोख बाझ नही होती।
और मेरी लाश की छाती से
दूध की एक बूद टपक पडती है।

अथवा

दुनिया की रोशनी से
सदिया शिक्वा करती है
इस मुहब्बत के मौसम मे
तुमने नफरत को कैसे बो दिया।

अथवा

अन्नदाता।
मेरी जबान और इन्कार ?
यह कैसे हो सकता है
हा, प्यार
यह तेरे मतलब की शै नही।

अथवा

अब मैं शायद सारी उम्र
जिस्मो के कीचड मे हाथ डाल
ढूढूगा इसी इश्क को
वर्जित-अवर्जित महक को
ढूढूगा इसी गध को।

अथवा

अस्पताल के दरवाजे पर
हक सच, ईमान और कदरें
जाने कितने ही लफ्ज बीमार पडे हैं।

युग जीवन के यथार्थ का इससे सच्चा तथा ममव्यथापूण चित्रण और क्या हो सकता है ! वास्तव म अमताजी की कविता के लिए भूमिका की आवश्यकता नही है। उनके काव्य चरण अनेक भावनाओ तथा यथाथ की भूमिकाएँ पार करते हुए अपनी ही अनुभूतिजनित अतिशयता, आवेग तथा गहराई म हृदय मे स्वत अंकित हो जाते है। वह कहती हैं—

मेरे इश्क के जख्म
तेरी याद ने सिये थे
आज मैंने टाके खोलकर
वह धागा तुझे लौटा दिया
मेरे इश्क की पाक किताब
कितनी ददनाक है,
आज मैंने इतजार का सफा
इसमे फाड लिया।

प्रेम व्यथा की इतनी खुली, मार्मिक तथा सरल अभिव्यक्ति है कि अमृताजी से उन्ही के शब्दो मे पूछने को जी करता है कि—

अप्सरा ओ अप्सरा,
हुस्न कैसा खेल है
कि इश्क जीत नही पाता !

इसम सन्देह नही कि अमतानी की कविता के अनुवाद स हिन्दी काव्य भाव धनी, स्वप्न सस्कृत तथा शिल्प समद्ध बनेगा। इसम आये हुए पजाबी के अनेक सरल काव्यमय शब्द हिन्दी के शब्दचित्र भण्डार की पूर्ति करेंगे। निस्सन्देह इस हिन्दी अनुवाद स उनकी मौलिक पजाबी भाषा की कृति मे कही अधिक मिठास है। इन कविताओ मे यह सहज ही प्रमाणित हो जाता है कि अमताजी का स्थान पजाबी ही मे नही समस्त भारतीय भाषाओ म भी प्रथम श्रेणी के योग्य है। इस सग्रह स हिन्दी के नये कवियो को विशेष रूप से प्रेरणा मिलेगी जो आज अपने हृदय की सहज भाव ग्राहिणा अमूल्य दष्टि को गँवाकर कोरी बौद्धिकता क नीरस नि सार मरु म दिग्भ्रान्त भटक रहे हैं। जिस गहरी भाव-सवेदना, सामाजिक यथाथ तथा युगमानव की व्यथा का सच्चा चित्रण अमताजी ने अपनी नारी हृदय की जादू तूली से इन कविताओ म किया है वे उनकी कृति को एक अत्यन्त उच्च तथा व्यापक स्तर पर उठा देती है। मैं इन कविताओ के आमुख के रूप मे दो शब्द लिखकर चरितार्थता का अनुभव करता हू।

इलाहाबाद — सुमित्रानन्दन पन्त
11 5 66

क्रम

खण्ड—1

खण्ड—2

खण्ड—3

फेर तैनू याद कीता
अग्ग नू घुम्मिआ असां
इश्क पियाला ज़हर दा
इक घुट्ट फिर मंगिआ असां

धुप्प दा टोटा

मैनू उह वेला याद ए
जद इक टोटा धुप्प दा
सूरज दी उंगल पकड़ के
'हेरे दा मेला वेखदा
भीड़ा दे विच्च गुआचिआ

सोचदी हा—सहिम दा ते—
सुज दा वी साक हुंदा ए
मैं जु इसदी कुछ नही
पर इस गुआचे बाल ने
इक हत्थ मेरा फड़ लिआ

तू किते लभदा नही
हत्थ नू छोहदा पिआ
निक्का ते तत्ता इक साह
ना हत्थ दे नाल परचदा
ना हत्थ दा खादा वसाह

'हेरा किते मुक्दा नही
मेले दे रौले विच्च वी
है इक आलम चुप्प दा
ते याद तेरी इस तरहा
जिओं इक टोटा धुप्प दा

धूप का टुकडा

मुझे वह समय याद है
जब धूप का एक टुकडा
सूरज की उँगली थामकर
अँधेरे का मेला देखता
उस भीड में खो गया

सोचती हूँ सहम का
और सूनेपन का एक नाता है
मैं इसकी कुछ नहीं लगती
पर इस खोये बच्चे ने
मेरा हाथ थाम लिया

तुम कहीं नहीं मिलते
हाथ को छू रहा है—
एक नन्हा सा गम साँस
न हाथ से बहलता है,
न हाथ को छोडता है

अँधेरे का कोई पार नहीं
मेले के शोर में भी
एक खामोशी का आलम है
और तुम्हारी याद इस तरह
जैसे धूप का एक टुकडा

याद

सूरज ने कुझ घाबर के अज
चानण दी इक बारी खोहली
बद्दल दी इक बारी भीडी
उतर गिआ हेरे दी पौडी

अबर दे भरवट्टिआ उत्ते
पता नही क्या मुढका आइआ
तारे, सारे बीडे खोहले
गला चन्न दा कुडता लाहिआ

बैठी हा मैं दिल दी गुटठे
याद तेरी अज ईकण आई
जीकण गिल्ली लक्कड विच्चा
गाढा कौडा धूआ उटठे

नाल सक्के सोचा आईआं,
जीकण सुक्की लक्कड भरदी
लाल किरमची अग्ग दे हउके
दोवें लक्कडा हुणे बुझाईआ

वरहे् जिसतरां कोले खिन्डे
कुझ बुज्झे, कुझ बुज्झणो रह गए
हत्थ समे दा साभण लग्गा
पोट्या उत्ते छाले पै गए

इक तेरे दे हत्था छुट्टी
जिंद वाहडनी टुट्ट गई है
तवारीख अज चौंके विच्चो
भुक्खी भाणी उट्ठ गई है

याद

आज सूरज ने कुछ घबरा कर
रौशनी की एक खिडकी खोली
बादल की एक खिडकी बन्द की
और अँधेरे की सीढ़ियाँ उतर गया

आसमान की भवों पर
जाने क्या पसीना आ गया
सितारों के बटन खोलकर
उसने चाँद का कुर्ता उतार दिया

मैं दिल के एक कोने में बैठी हूँ
तुम्हारी याद इस तरह आयी
जैसे गीली लकडी में से
गाढ़ा कड़वा धुआँ उठे

साथ हजारों ख्याल आये
जैसे सूखी लकडी
सुर्ख आग की आह भरे
दोनों लकडियाँ अभी बुझायी हैं

वर्ष कोयलों की तरह बिखरे हुए
कुछ बुझ गये, कुछ बुझने से रह गये
वक्त का हाथ जब समेटने लगा
पोरों पर छाले पड गये

तेरे इश्क के हाथ से छूट गयी
और जिन्दगी की हँडिया टूट गयी
इतिहास का मेहमान
चौके से भूखा उठ गया

रोजी

नीले अंबर दी इक गुटठे

रात मिल्ल दा घुग्गू वज्जे
चन्द्रमा दी चिमनी विच्चो
चिट्टा गाडा धूआं उटठे

सुपने जीवण कई भट्ठीआं
हर इक भट्ठी अग्ग झावदा
मेरा इश्क मजूरी करदा

मेल तेरा कुझ ईंधण मिलदा
जीकण कोई तलीआं उत्ते
इक डग दी रोज़ी धरदा

जिहड़ी सक्खणी हाडी भरदा
रिन्ह पका के अन्न परस के
उहीओ हाडी मूधी धरदा

रहिंदी अग्ग 'ते हत्थ सेकदा
घडीए मासे निस्सल हूंदा
शुकर शुकर अल्ला दा करदा

रात मिल्ल दा घुग्गू वज्जे
चन्द्रमा दी चिमनी विच्चा
धूआं निकले इसे आस ते

जोई कमाणा सोई खाणा
ना कोई किणका कल दा बचिआ
ना कोई भोरा भलक वासते

रोजी

नीले आसमान के कोने में

रात मिल का साइरन बोलता है
चांद की चिमनी में से
सफेद गाढ़ा धुआं उठता है

सपने जैसे कई भट्ठियां हैं
हर भट्ठी में आग झोंकता हुआ
मेरा इश्क मजदूरी करता है

तेरा मिलना ऐसे होता है
जैसे कोई हथेली पर
एक वक्त की रोजी रख दे

जो खाली हँडिया भरती है
रांध-पका कर अन्न परस कर
वही हांडी उलटी रखता है

बची आंच पर हाथ सेंकता है
घड़ी पहर को सुस्ता लेता है
और खुदा का शुक्र मनाता है

रात मिल का साइरन बोलता है
चांद की चिमनी में से
धुआं इस उम्मीद पर निकलता है

जो कमाता है वही खाता है
न कोई टुकड़ा कल का बचा है
न कोई टुकड़ा कल के लिए है

मैं

अबर जदो वी रात दा
ते चानण दा रिशता गढदे
तारे बधाईआं वडदे
क्यों सोचदी हां मैं जे क्दी
मैं, जु तेरी कुझ नही लगदी

जिस रात दे होठा ने कदे
सुपने दा मत्था चुम्मिआ
सोचा दे पैरी छणक्दी
इक झाजर जही उस रात दी

इक बिजली जदो असमान 'त
बद्दला दे वरके फोलदी
मेरी कहाणी भटकदी
आद ढूडदी, अ'त ढूडदी

है खडक पदी कोई तेर
दिल दी इक बारी जदो
मैं सोचदी हां केहो जही
जुरअत है मेर सवाल दी !

तलीआं दे उत्ते इश्क दी
मैंहदी दा कुझ दावा नही
हिजर दा इक रग है
ते इक खुशबू है तेरे जिकर दी

मैं, जु तेरी कुझ नही लगदी

मैं

आसमान जब भी रात का
और रौशनी का रिश्ता जोडते हैं
सितारे मुबारकबाद देते हैं
मैं सोचती हूँ, अगर कही
मैं, जो तेरी कुछ नही लगती

जिस रात के हाठो ने कभी
सपने का माथा चूमा था
सोच के पैरा मे उस रात से
इक पायल सी बज रही है

इक बिजली जब आसमान मे
बादलो के वर्क उलटती है
मेरी कहानी भटकती है
आदि ढूढती है, अन्त ढूँढती है

तरे दिल की एक खिडकी
जब कही बज उठती है
सोचती हूँ, मेरे सवाल की
यह कैसी जुर्रत है !

हथेलियो पर इश्क की
मेहदी का कोई दावा नही
हिज्र का एक रग है
और तेरे जिक्र की एक खुशबू

मैं, जो तेरी कुछ नही लगती

मुलाकात

मेरा शहर जदो तू छोहिआ
अंबर आखे मुट्ठा भर वे
अज मैं तारे वारा

दिल दे पत्तण मेला जुडिआ
राता जिआ रेशम दीआ परीआं
आईआं बाह् कतारा

तेरा गीत जदा मैं छोहिआ
कागज उत्ते उँघड आईआ
केसर दीआ लकीरा

सूरज ने अज महदी घोली
तलीआ उत्ते रँगीआ गईआ
अज दोवें तकदीरा

दावत

रात कुडी ने दावत दित्ती,
तारे जीकण चौल छडींदे
किसने देगा चाढीआ

किसने आदी चन्न सुराही
चानण घुट्ट शराब दा
ते अंबर अक्खां गाढीआ

धरती दा अज दिल पिआ धडके
मैं सुणिआ अज टाहणा द घर
फुल्ल प्राहुणे आए वे

मुलाकात

मेरे शहर ने जब तेरे कदम छुए
सितारों की मुट्ठियाँ भरकर
आसमान ने निछावर कर दी

दिल के घाट पर मेला जुड़ा
ज्यों रातें रेशम की परियाँ
पाँत बाँधकर आयी

जब मैं तेरा गीत लिखने लगी
कागज़ के ऊपर उभर आयी
केसर की लकीरें

सूरज ने आज मेहदी घोली,
हथेलियों पर रँग गयी
हमारी दोनों तकदीरें

दावत

रात-कुड़ी ने दावत दी
सितारों के चावल फटक कर
यह देग किसने चढ़ा दी

चाँद की सुराही कौन लाया
चाँदनी की शराब पीकर
आकाश की आँखें गहरा गयी

धरती का दिल धड़क रहा है
सुना है आज टहनियों के घर
फूल मेहमान हुए हैं

इस दे अगा की कुझ लिखिआ
हुण एहां तकदीरा कोला
केहड़ा पुच्छण जाए क

उमरा दे इस कागज उत्ते
इक्क तेरे अंगूठा लाइआ
कौण हिसाब चुकाएगा

विरासत ने इक नगमा लिखिआ
कहिंदे न कोई अज रात नूं
ओहीओ नगमा गाएगा

कलप वृछ दी छाँवें वहि क
कामधेन दा दुध पसमिआ
किसने भरीआ दोहणीआ

किहड़ा सुणे हवा द हउके
चन्न नी जिन्दे चलीए—सानू
सद्दण आईआ होणीआ

आवाज

वरिहा दे पडे चीर के
तेरी आवाज़ आई है
ससी दे पैरा नू जिवें
किसे ने मरहम लाई है

अज किसे दे मोढिआ ता
इक हुमा लघिआ जिवें
चन्न ने अज रात दे
वाला च फुल्ल टुंगिआ जिवें

आगे क्या लिखा है
अब इन तकदीरों से
कौन पूछने जाये

उम्र के कागज पर
तेरे इश्क ने अँगूठा लगाया
हिसाब कौन चुकाएगा !

किसमत ने इक नगमा लिखा है
कहते हैं कोई आज रात
वही नगमा गायेगा

कल्प वृक्ष की छाँव में बैठकर
कामधेनु के छलके दूध से
किसने आज तक दोहनी भरी !

हवा की आहें कौन सुने,
चलूँ
तकदीर बुलाने आयी है

आवाज

बरसों की राहें चीरकर
तेरी आवाज आयी है
सस्सी के पैरों को जैसे
किसी ने मरहम लगायी है

आज किसी के सर से
जैसे हुमा गुजर गया
चाँद ने रात के बालों में
जैसे फूल टाँक दिया

नीदर दे होठा चो जिवें
सुपने दी महिक आउंदी है
पहिली किरन जिओ रात दे
मत्थे नू सगण लाउंदी है

हर इक हरफ दे बदन 'चा
तेरी महिक अउदी रही
मुहब्बत दे पहिले गीत दी
पहिली सतर गउंदी रही

हसरत दे धागे जोड के
सालू असी उणदे रहे
बिरहा दी हिचकी विच्च वी
शहनाई नू सुणदे रहे

तू नही आया

चेतर ने पासा मोडिआ
रगा दे मेले वास्ते
फुल्ला ने रेशम जोडिया
तू नही आया

होईआ दुपहिरा लम्बीआ
दाखा नू लाली छोह गयी
दाती ने कणका चुम्मीआ
तू नही आया

बद्दला दी दुनीआ छा गयी
धरती ने बुक्का जोड के
अम्बर दी रहिमत पी लई
तू नही आया

नींद के हाथों से जैसे
सपने की महक आती है
पहली किरण जैसे रात की
मांग में सिन्दूर भरती है

हर इक हरफ के बदन से
तेरी महक आती रही
मुहब्बत के पहले गीत की
पहली सतर गाती रही

हसरत के धागे जोड़कर
हम ओढ़नी बुनते रहे
बिरहा की हिचकी में भी हम
शहनाई को सुनते रहे

तू नहीं आया

चैत ने करवट ली,
रगों के मेले के लिए
फूलों ने रेशम बटोरा
तू नहीं आया

दोपहरें लम्बी हो गयीं
दाखों को लाली छू गयी
दरांती ने गेहूँ की बालियाँ चूम लीं
तू नहीं आया

बादलों की दुनिया छा गयी
धरती ने दोनों हाथ बढ़ाकर
आसमान की रहमत पी ली
तू नहीं आया

रुकखा ने जादू कर लिआ
जंगल नू छोहदी पौण दे
होठा 'च शहद भर गिआ
तू नही आया

रता ने जादू छोहणीआ
चन्ना ने पाईआ आण वे
राता दे मत्थे दौणीआ
तू नही आया

अज फेर तारे कह गये
उमरा दे महिली अजे वी
हुसना दे दीवे बल रहे
तू नही आया

किरणा दा झुरमट आखदा
राता दी गूढी नीद चो
हाले वी चानण जागदा
तू नही आया

गल्ला

आ सज्जण अज गल्ला करीए

तेरे दिल दे बागा अन्दर
हरी चाह दी पत्ती वागू
जिहडी गल्ल जदा की उग्गी
उसे गल्ल नू तोड लिआ तू

हर इक कूली गल्ल छुपायी
हर इक पत्ती सुक्कणे पायी

मिट्टी दे इस चुल्हे अन्दर
फिरो अग्ग नू फोल लवागे
इक दो फूका मार लवागे
बुज्झी लक्कड बाल लवागे

मिट्टी दे इस चुल्हे अन्दर
सब इश्क दा बोल पवेगा
मेरे जिसम ताबीए अन्दर
दिल दा पाणी खौल पवेगा

आ सज्जण अज खोल्ह पोटली

हरी चाह दी पत्ती वागू
उहीओ तोड गवाईआ गल्ला
उहीओ साभ सुकाईआ गल्ला
इस पाणी विच पा के वेखी
इस दा रग बटा के वेखी

तत्ता घुट्ट इक तू वी पीवी
तत्ता घुट्ट इक मै वी पीवा
उमर-हूनाला अंसा लघाइआ
उमर सिआला लघदा नहीऊँ

आ सज्जण अज गल्ला करीए

सिआल

जिन्द मेरी ठुरकदी
होठ नीले प गए
ते आत्मा दे पैर वल्ला
कम्बणी चढदी पई

मिट्टी के इस चूल्हे में से
हम कोई चिनगारी ढूंढ लेंगे
एक दो फूँकें मार लेंगे
बुझती लकड़ी फिर से बाल लेंगे

मिट्टी के इस चूल्हे में
दर्द की आंच बोल उठेगी
मेरे जिस्म की हँडिया में
दिल का पानी खौल उठेगा

आ साजन आज खोल पोटली

हरी चाय की पत्तों की तरह
वही तोड़-भँवाई बातें
वही सम्मान सुगन्धी बातें
इस पानी में डालकर देख
इसका रंग बदलकर देख

गर्म घूँट इक तुम भी पीना
गर्म घूँट इक मैं भी पी लूँ
उम्र का ग्रीष्म हमने बिता दिया
उम्र का शिशिर नहीं बीतता

आ साजन आज बातें कर लें

जाड़ा

मेरी जान ठिठुर रही है
होंठ नीले पड़ गये हैं
आत्मा के पैर की तरफ से
कपकँपी छूट रही है

थरिहा दे बद्दल गरजदे
इस उमर दे असमान ते
वेहडे दे विच्च पैंदे पए
वानून गोहडे बरफ दे

गलीआ दे चिक्कड लंघ के
जे अज तू आवें किते
मैं पैर तेरे धो दिआ

बुत तेरा सूरजी
कम्बल दी कन्नी चुक्क के
मैं हड्डा दा ठार भन्न ला

इक कोली धुप्प दी
मैं डीक ला के पी लवा
ते इक टोटा धुप्प दा
मैं कुक्ख दे विच पा लवा

ते फेर थोर उमर दा
इह सिआल गुजर जाएगा

सवेर

डाढी उच्ची कन्ध वक्त दी
बडी उचावी भीडी सौडी
रात जिवें लक्कड दी पौडी

लिफ्दे जादे गोल तिलक्कवें
हादसिआ दे सैंआ डण्डे
जिस डण्डे ते पैर टिकादी
उस तो अगला धुट्ट वे फडदी
जिन्द-सवेर उताह नू चढदी

इस उम्र के आसमान पर
बरसों के बादल गरज रहे हैं
कानून जैसे बज्र की गाज
मेरे आँगन में गिर रहे हैं

कीचड़ भरी गलियाँ पार करके
जो तुम यहाँ आ जाओ
मैं तुम्हारे पैर धो दूँ

तुम्हारा सूरज का सा मुख
कम्बल का किनारा उठाकर
मैं हाथ-पाँव सेंक लूँ

एक कटोरा धूप का
मैं एक साँस में पी लूँ
और एक टुकड़ा धूप का
मैं अपनी कोख में रख लूँ

और इस तरह शायद
जन्म जन्म का जाड़ा बीत जाए

सवेरा

समय की दीवार बहुत ऊँची
लम्बी तंग और अँधियारी
रात जैसे काठ की सीढ़ी

मचकती गोल फिसलाई
हादसों की गई सीढ़ियाँ
जिस सीढ़ी पर पाँव टिकाती
उससे अगली सीढ़ी को थामती
एक सुबह ऊपर को चढ़ती

अबर आशक ऊंधी पायी
बैठा धुन्द दा हुक्का पीवे
सूरज दा इक कोला लैवे
लीका पावे फेर बुझावे

फिर पूरब दी मन्जी झाडे
वद्दल वट्ट कडढ के सारे
नीली चादर करे सवाहरी
गिणे गीटीआ बारो वारी

कदो किसे दा हत्थ छुटकिआ
कदो किसे दा पैर थिडकिया
गल्ल, जिसतरा मूहा गुगी
गल्ल, जिसतरा कन्नो बोली

पूरब दी अज मजी खाली
कोई सवेर बहिण ना आयी
अबर बौरा ढूंड रिहा है
धरती दी हर खुन्दर खायी

अग्ग दी बात

अग्ग दी इह बात है
तूह इह बात पाई सी
ओही सिगरट जिन्द दी
जो तूं कदे सुलगाई सी

चिणग तेरी देण सी
इह दिल सदा धुखदा रिहा
वक्त कानी पकड के
लेखा कोई लिखदा रिहा

अम्बर-आँगन औंधा बैठा
आज धुन्ध का दूसरा पाँव
सूरज का रथ रोकता अक्सर
सीखें सीख और मुराद

फिर पूरब को लाट झाड़ेगा
बादल जैसी कई सलवटें
नीली चादर झाड़ बिछाना
और सुबह की राह देखेगा

हाथ किसी का कब लगता
पाँव किसी का कब टिकता
बात जिस तरह बिल्कुल सूनी
रात जिस तरह बिल्कुल बहरी

सूरज का लश्कर भारी है
कोई सुबह आज नहीं आया
अम्बर चोरा ढूँढ़ रहा है
धरती की हर तलाश भाई

आग की बात

यह आग की बात है
तूने यह बात सुनायी थी
यह ज़िन्दगी की वही सिगरेट है
जो तूने कभी सुलगायी थी

चिंगारी तूने दी थी
यह दिल सदा जलता रहा
वक़्त कलम पकड़कर
कोई हिसाब लिखता रहा

चौदा कु मिन्ट होए ने
आ वेख वहीआ इहृनीआ
चौदा कु साल होए ने
आ वेख कलमा कहिदीआ

एस मेरे जिसम अन्दर
साह तेरा चलदा रिहा
धरती गवाही दएगी
धूआं निकलदा रिहा

जिन्द सिगरट वल गयी
महिक मेरे इश्क दी
कुझ तेरे साहा दे विच
कुझ पौण दे विच रल गयी

वेख टोटा आखरी
उँगला दे विच्चो छड्ड दे
सेक मेरे इश्क दा
पोटा ना तेरा छोह लव

जिन्द दा हुण गम नही
इस अग्ग नू सम्भाल लैं
खैर मँगा हत्थ दी
हुण होर सिगरट बाल लैं

बुरकी

जिन्द-कुडी ने कल्ह रात नू
सुपने दी इक बुरकी भन्नी
पता नही इह खबर किसतरा
पहुँच गयी अबर दे कन्नी

चौदह मिनट हुए हैं
इसका खाता देखो
चौदह साल हुए हैं
इस कलम से पूछो

मेरे इस जिस्म में
तेरा सांस चलता रहा
धरती गवाही देगी
धुआं निकलता रहा

उम्र की सिगरेट जल गयी
मेरे इश्क की महक
कुछ तेरी सांसों में
कुछ हवा में मिल गयी

देखो यह आखिरी टुकड़ा है
उँगलियों में से छोड़ दो
कहीं मेरे इश्क की आंच
तुम्हारी उँगली को न छू ले

जिन्दगी का अब गम नहीं
इस आग को सँभाल ले
तेरे हाथ की खैर मांगती हूँ
अब और सिगरेट जला ले

निवाला

जिन्द कुड़ी ने कल रात
सपने का इक निवाला तोड़ा
जाने यह खबर किस तरह
आसमान के कानों तक जा पहुँची

वड्डिआ खम्भा खबर सुणी
ते लम्बीआ चुञ्झा खबर सुणी
ते खुढिआ मूहा खबर सुणी
ते तिखिआ नहुँआं खबर सुणी

इस बुरकी दा नगा पिण्डा
इस खुशबू दा वज्जण पाटा
ना कोई मिलिआ मन दा ओहला
ना कोई तन दा झुन्गलमाटा

इक झपटटे बुरकी खुस्सी
दोवें हत्थ वलू घर घत्ते,
इक झपटटे गल्ह झरीटी
नहुँदर वज्जी मूह द उत्ते

मूह दे विच बुरकी दी थावें
रहि गईआ बुरकी दीआ गल्ला
अबर द विच उड्डण पईआ
राता जिवें कालीआ इल्ला

नाग मणी

डाढा घणा अकल दा जगल
इलम जिवें इक रुख चन्नण दा
मन दा सप्प कौडीआ वाला
मत्थे दे विच्च मणी चमकदी
पौणा द विच्च फण फैलाया

पोले पैर सपाधा आया
होठा उत्ते बीन इश्क दी
हत्थ आस दी भही पच्छी
कच्चा दुँध मुहब्बत वाला
मन दा सप्प पटारी पाया

बड़े पत्तों ने यह खबर सुनी
नन्हीं चोचों ने यह खबर सुनी
तेज़ हवाओं ने यह खबर सुनी
सीने तम्बूरों ने यह खबर सुनी

रंग निखरने का बदन लगा
खुशबू की ओढ़नी फटी हुई
मन की ओट नहीं मिली
तन की ओट नहीं मिली

एक समन्दर में किनारा छिन गया
दोनों हाथ कच्चे हो गए
गालों पर सरसों आयी
होंठों पर नाखूनों के निशान

मुँह में निवाले की जगह
निवाले की बातें रह गयीं
और आसमान में रातें
काली चीलों की तरह उड़ने लगीं

नागमणि

गहरा घना अकल का जंगल
हुस्न वृक्ष चन्दन का जैसे
मन का साँप कौड़ियोंवाला
माथे में एक मणि चमकती
और हवा में फन फैलाया

धीमे पाँव सपेरा आया
होठों पर एक बीन इश्क की
हाथ आग की बन्द पिटारी
कच्चा दूध मुहब्बतवाला
मन का साँप पिटारी पाया

बैठ सपैला इक चुराहे
बीन वजावे सप्प खिडाव
वदे सप्प नू गल विच पावे
हस्से राग अते विख रोवे
सारा लोक तमाशे आया

कम्वणी

धरती ने अज वरत खोल्हणा
दिल दी थाली कौण परोसे
गीता वाले चौल छडदिआ
कम्वण लग्गी उवखली

होणी ने अज रू पिंजाइआ
जिओ जिओ चरखा घूकर देवे
कदी जावे जिंद जुलाहो
कदी जावे तक्कली

अम्वर दी अज पौडी कम्वे
तारे उतरण वाहो दाही
किहडे मन दे महला अन्दर
पई अचानक भउजली

किस पापी ने तीर चलाया
इश्क दा जगल सहम गिआ है
डरदी कम्वदी भज्ज गयी है
यादा दी मिरगावली

बैठ सपेरा एक चौराहे
बीन बजाये नाग रिझाये
कभी नाग को गले लगाये
हँसे राग और विष रोये
सारा लोक तमाशे आया

कम्पन

धरती आज बनी सौतेली
शिव की पायल बँधे घुँघरू
मीरा का यह प्यार छूटे
काँप रही है ओखली

सिरमा ने है दई सिलाई
ज्यों-ज्यों धरा गूँज गुनाय
काँप रही है प्राण जुलाहिन
काँप रही है तकली

आज गगन की सीढ़ी काँप
तारे उतरें एक-एक कर
मन के चिन महलों में सहमा
मची हुई है खलबली

किस पापी ने तीर चलाया
दरख का जंगल सहम गया है
डरते डरते भाग गयी है
यादों की मिरगावली

दावत

अकल इलम ने मिट्टी गोई
कलम मेरी घुमिआरी होई
गीत जिसतरा सागर कूज़े
हुणे हुणे इस चॅक तो लाहे

दिल दी भट्ठी वालण पाया
दोही हत्थी उमर खरच के
कडढी असा शराब इश्क दी
महिफ़ल दे विच्च लै के आये

सदीआ ने अज हउका भरिआ
किहा सराप दित्तोई सानू
जिंद कुडी अज विट्टर बैठी
किसे घुट्ट नू मूह ना लाये

इस दावत नू की कुझ कहीए
इश्क शराब इसतरा जापे
हर इक जाम दीआ अक्खा विच्च
जीकण गट गट अथरू आये

कुफ़र

अज असा इक दुनीआं वेची
ते इक दीन विहाज लिआये
गल्ल कुफर दी कीती

सुपने दा इक थान उणाया
गज कु कपडा पाड लिआ, ते
उमर दी चोली सीती

दावत

अपने जन्म की माटी भीगी
कलम मेरी कुम्हारिन हुई
गीत जिस तरह गागर पके
अभी-अभी पाक से आये

दिल की भट्ठी आग जलायी
दोनों हाथों उमर भर कर
एक शराब हज़ार आत्मा
महफ़िल में हम लेकर आये

नदिया ने विश्वास लिया इक
ऐसा साथ लिया है हमने
जीवन-यात्रा रूठ गयी है
एक घूँट न होंठ छुआये

इस दावत का क्या सिला दें
इश्क़-शराब इस तरह महँगी
हर इक जाम की कीमत में हो
जैसे कुछ आँसू भर आये

कुफ़्र

आज हमने एक दुनिया बेची
और एक दीन ख़रीद लिया
हमने कुफ़्र की बात की

सपनों का एक थान बुना था
एक गज कपड़ा फाड़ लिया
और उम्र की चोली सी ली

अज असा अवर दे घडिओ
यह्ल दी इच चम्यणी लाही
घुट्ट चानणी पीती

गीता नाल चुका जावांगे
इह जु असां मोत दे कोला
घडी हुधारी लीती

इक मुकाम

कलम ने अज तोडिआ गीता दा काफीआ
इश्क मेरा पहुँचिया इह केहडे मुकाम ते ।

वेख नजरा वालिआ कि वहनी आ साहमणे
तली विचा हिजर दी छिलतर नू कडद दे ।

जिस हनेरे तो सिवाये होर कुच ना कत्तिआ
उह मुहब्बत दे गयी किरणा अटेर के

उट्ठ आपणे घडे चो पाणी दा कौल देह
धो लवागी बैठ के राह्वा दे हादस

रोशनी

हिजर दी इस रात विच्च
कुछ रोशनी औंदी पई
फेर बत्ती याद दी
कुछ होर उच्ची हो गई ।

आज हमने आसमान के घड़े से
बादल का ढकना उतारा
और एक घूंट चांदनी पी ली

यह जो एक घड़ी हमने
मौत से उधार ली है
गीतों से इसका दाम चुका देंगे

एक मुकाम

कलम ने आज गीतों का काफिया तोड़ दिया
मेरा इश्क यह किस मुकाम पर आ गया है

देख नजरवाले, तेरे सामने बैठी हूँ
मेरे हाथ से हिज्र का कांटा निकाल दे

जिसने अँधेरे के अलावा कभी कुछ नहीं बुना,
वह मुहब्बत आज किरनें बुनकर दे गयी

उठो ! अपने घड़े से पानी का एक कटोरा दो
राह के हादसे मैं इस पानी से धो लूंगी

रोशनी

हिज्र की इस रात मे
कुछ रोशनी-सी आ रही है
शायद याद की बत्ती
कुछ और ऊँची हो गयी है

इक हादसा, इक जख़म
ते इक चीस दिल दे कोल सी
रात नूं इह तारिआं दी
रसम ज़रवां दे गयी

नज़र दे असमान तो
है टुर गया सूरज किते
चन्न विच पर ओस दी
खुशबू अजे औंदी पई

रल गई सी एस विच
इक बून्द तेरे इश्क दी
इस लई मैं उमर दी
सारी कुड़ित्तण पी लई

इक गल्ल

सुच्चा दुद्ध मुहब्बत मेरी
चिट्टे चावल बरिहा वाले
माजी धोती दिल दी हाडी
दुनीआ जीवण गिल्ली लक्कड
सारी वस्त ब्वाख गयी है

रात जिवें पित्तल दी कौली
चिट्टे चन्न दी कली लहि गई
अज कलपना कसर गई है
सुपना जीवण कसर जाए
नींदर जिवें बुडाहद गई है

एक हादसा, एक जख्म
एक टीस दिल के पास थी
सितारों की रकम ने
रात को इसे जरब दे दी

नजर के आसमान से
सूरज कहीं दूर चला गया
पर अब भी चाँद में
उसकी खुशबू आ रही है

तेरे दर्द की एक बूँद
इसमें मिल गयी थी
इसलिए मैंने उम्र की
सारी कड़वाहट पी ली

एक बात

सुच्चे दूध जैसी मेरी मुहब्बत
चिट्टे चावल बरसांवे
माँजी धुली दिल की हाँडी
दुनिया जैसे गीली लकड़ी
सारी वस्तु धुआँख गई है

रात जैसे पीतल की कटोरी है
चाँद की सफेद कलई उतर गयी
कल्पना पितरा गयी है
सपना कसरा गया है
और सारी नींद कड़वा गयी है

जिद-वुही दे अग मोवले
यादा जिवें सोटीआ छापा
उगला दे विच चीघा पईआ
समिआ दे सुनियारे कोला
रेती जिवें सडाच गई है

ठरदा जाए इश्व दा पिंडा
गीत दा झग्गा वीवण सीवां
उधड गया खिआल तरोपा
वलम-सूई दा नक्वा टुट्टा
सारी गल्ल गुआच गयी है

खुशी

दूरा विधरा वाज सुणीवी
'वाज जिसतरा तेरी होवे
व ना ने इक हऊका भरिआ
वम्बण लग्गी जिन्द सिआणी

खुशा अजाणी हत्थ छुडा वे
दोवें निक्खीआ बाहवा अडडी
ईवण दौडी, जीकण कोई
बालडी दौडे परो बाहणी

पहिला व डा सस्कार दा
दूजा व डा लाव लाज दा
तीजा व डा धन दौलत दा
खतरे जीवण वई छिलतरा

तलीआ विचो व डे वढदी
पोटे घुटदी लहू पूझदी

ज़िंदगी के हाथ में
यादें जैसे सँकरी अँगूठी
उँगली में चीह्न पड़ गयी
समय के सुनार से
रेती जैसे खो गयी है

दरद का बदन ठिठुर रहा है
गीत का कुरता कैसे सीऊँ
खयालों का धागा उलझ गया है
कलम की सूई टूट गयी है
और सारी बात खो गयी है

खुशी

दूर कहीं से आवाज़ आयी
आवाज़ ज़रा तेरी हो
कानों ने गहरी साँस ली
जीवन-यात्रा काँप उठी

मासूम खुशी हाथ छुड़ाकर
दोनों नन्ही बाहें फैलाकर
एक बालिका की तरह
नंगे पाँव भाग उठी

पहला काँटा संस्कार का
दूसरा काँटा लोक-लज्जा का
तीसरा काँटा धन दौलत का
खतरे जैसे कितने काँटे

तलवों से काँटे निकालती
पोर दबाती लहू पोंछती

मीला मीला पैर सगादी
अप्पड पहुँची सुनी निमाणी

अगला पैर अगाह नू जाव
पिछला पैर पिछाह नू आवे
'वाज जिसतरा असला तेरी
नज़र जिसतरा बही वेगानी

दोचित्ती दा तिसा भ ड़ा
महड़ी मे विच ईयण सुभा
अक्ल इलम दा नहूँ हारिआ
सुभ गया है कित्या ताणी

नाग पैर सुज्जदा जावे
ज़हिर जिहा फैलदा जावे
हक्की वक्की मुज्ज बैठी
गेण लग्ग पई सुरी अज्जाणी

साल मुबारक ।

जिवें सोच दी कघी विच्चो
टुट्ट गया इक ददा
जिवें समझ द झग्गे उत्ते
लॅग गयी इक सुघी
जिवें सिदक दी अख विच अज
चुभ गया इक तीला
नीदर ने जिआ उगला दे विच
सुपने दा इक कोला फड़िआ
नवा साल अज ईकण चढ़िआ

मीलों चोगा लँगड़ाती हुई
मासूम मुन्नी यहाँ आ पहुँची

अगला पाँव आगे को बढ़े
पिछला पाँव पीछे को मुड़े
आवाज़ जैसे बिलकुल तेरी
नज़र जैसे बिलकुल बेगानी

असमंजस का तीखा काँटा
एड़ी में इस तरह चुभ गया
अक्ल इल्म के नाखून हार गए
जाने काँटा कहाँ तक उतर गया

सारा पाँव सूज गया है
ज़हर-सा फैल रहा है
हैरान परेशान ज़मीन पर बैठी
मासूम मुन्नी रो उठी है

साल मुबारक

जैसे सोच की कंघी में से
एक दंदा टूट गया
जैसे समझ के कुर्ते का
एक चीथड़ा उड़ गया
जैसे सिदक की आँखों में
एक तिनका चुभ गया
नींद ने जैसे अपने हाथों में
सपने का जलता कोयला पकड़ लिया
नया साल कुछ ऐसे आया

जीवण दिल दी पकिा विच्चा
बुझ गया इक अक्खर
जिआ वियोग दे कागज उत्ते
डुल्ह गई अज सिआही
जिवें सम दे होंटा विचा
निकल गया इक हउका
आदम जात दीआ अक्खा विच
जीवण कोई अथरु अड़िआ
नवा साल अज ईकण चढ़िआ

जिवें इशक दी जीभ दे उत्ते
उठ पिआ इक छाला
सभिअता दीआ बाहवा विचो
भज्ज गयी इक चूडी
तवारीख दी मुंदरी विच्चा
डिग्ग पिआ इक थेवा
धरती न जिऊं अंबर दा इक
वडा उदास जिहा खत पढ़िआ
नवा साल अज ईकण चढिआ

माया

प्रसिद्ध चित्तरकार विनसैंट वानगाग दी कलपित प्रमिका माया नू !

परीए नी परीए !
हूरा शाहजादीए !
गोरीए विनसैंट दीए !
सच किओ बणदी नही ?

हुसन काहदा ! इश्क काहदा !
तू कही अभिसारिका !

जैसे दिल के फिकरे से
एक अक्षर बुझ गया
जैसे विश्वास के कागज़ पर
सियाही गिर गयी
जैसे समय के होंठो से
एक गहरी साँस निकल गयी
और आदमज़ात की आँखों में
जैसे एक आँसू भर आया
नया साल कुछ ऐसे आया

जैसे इश्क की ज़बान पर
एक छाला उठ आया
सभ्यता की बाँहों में से
एक चूड़ी टूट गई
इतिहास की अँगूठी में से
एक नीलम गिर गया
और जैसे धरती ने आसमान का
एक बड़ा उदास-सा ख़त पढ़ा
नया साल कुछ ऐसे आया

माया

प्रसिद्ध चित्रकार विंसेण्ट वानगाग की कल्पित प्रेमिका माया से !

अप्सरा ओ अप्सरा !
शाहज़ादी ओ शाहज़ादी !
विंसेण्ट की गोरी !
तुम सच क्यों नहीं बनती ?

यह कैसा हुस्न ! और कैसा इश्क !
और तू कैसी अभिसारिका !

अपणे किसे महिबूब दी
आवाज़ तू सुणदी नही

दिल द अन्दर चिणग पा के
साह जदो लन्घा कोई
सुलगदे अंगिआर कितने
तू कदे गिणदी नही

काहदा हुनर ! काहदी कला !
तरना है इह इक जीऊण दा
सागर तखईअल दा कदे
तू कदे मिणदी नही

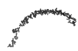
परीए नी परीए !
हूरा शाहज़ादीए !
खिआल तेरा पार ना—
उरवार देंदा है

रोज़ सूरज ढूढदा है
मूह किते दिसदा नही
मूह तेरा जो रात नू
इकरार देंदा है

तडप किसनू आख दे ने
तू नही इह जाणदी
क्यो किसे तो जिन्दगी
कोई वार देंदा है !

दोवें जहान आपणे
लादा है कोई खेड ते
हसदा है नामुराद
ते फिर हार देंदा है।

परीए नी परीए !
हूरा शाहज़ादीए !



लक्या विआल इसतरा
औणगे टुर जाणगे

अरगवानी ज़हिर तेरा
रोज़ कोई पी लवेगा
नकश तेरे रोज़ जादू
इसतरा कर जाणगे

हस्सेगी तेरी कलपना
तडपेगा कोई रात भर
शाला दे साल इसतरा
इसतरा खुर जाणगे

हुनर मुक्खा रोटी ए !
प्यार मुक्खा गोरी ए !
कितने कु तेर वानगाग
इसतरा भर जाणगे !

परीए नी परीए !
हूरा शाहज़ादीए !
हुसन काहदी खेड है
इश्क जद पुगदे नही

रात है काली बडी
उमरा किसे ने बालीआ
चन सूरज कहे दीवे
अजे वी जगदे नही

बुत्त तेरा सोहणीए !
ते इक सिट्टा कणक दा
काहदीआ इह धरतीआ
अजे वी उगद नही

हुनर मुक्खा रोटीए !
प्यार मुक्खा गोरीए !
काहदा है रुख निज़ाम दा
फल कोई लगदे नही ।

इस तरह लाखों सवाल
आयेंगे, चले जायेंगे

तेरा अरग़वानी ज़हर
कोई रोज़ पी लेगा
और तेरे नक्श हर रोज़
जादू कर जायेंगे

तेरी कल्पना हँसेगी
कोई रात-भर तड़पेगा
और बरस के बरस
इस तरह बीत जायेंगे

हुनर भूखा है ए रोटी !
प्यार भूखा है, ए गोरी !
तेरे कितने बानगाग
इस तरह मर जायेंगे !

अप्सरा ओ अप्सरा !
शहज़ादी ओ शहज़ादी !
हुस्न कैसा खेल है
कि इश्क जीत नहीं पाता

रात जाने कितनी काली है
उम्र को भी जला के देख लिया
चाँद सूरज कैसे चिराग हैं
कोई जल नहीं पाता

ए अप्सरा ! तुम्हारा बुत
और गेहूँ की एक बाली
यह कैसी धरतियाँ है
कुछ भी उग नहीं पाता

हुनर भूखा है, ए रोटी !
प्यार भूखा है, ए गोरी !
निज़ाम का पेड़ कैसा है
जैसे कोई फल नहीं लगता।



खण्ड—2



8954

हादसा

वर्हिा की इक आरी हृस्स
हादसिया दे तिगे ददे
अचणचेती पावा टुट्टा
अम्बर दी इस चौंकी उत्ता
डिग पिआ शीशे दा सूरज
अक्खा विच्च ककरा पईआ
नीझ मेरी अज जखमी होई
दुनीआ शाहिद अजे वी वस्से
नीझ मेरी नू कुछ ना दिस्से

दुद्ध दी बून्द

मौत मेरी इक गल्ल चरोकी
कदी कदी मैं उट्ठा सोचा
चल्ला—फुल प्रवाह आवा मैं
लाशा दा करजा लाह आवा मैं

हर घटना, समझ सकदी हा
इक घटना समझ नही सकदी

हादसा

सड़कों की भारी हूंग रही थी
घटाओं में गीत तुरीन थे
अकस्मात एक पाया टूटा
आसमान की चोटी पर से
सोने का सूरज बिखर गया
आँखों में कंकड़ छितरा गए
और नज़र ज़ख्मी हो गयी
कुछ दिखायी नहीं देता
दुनिया शायद अब भी बाकी होगी।

दूध की बूंद

मेरी मौत, एक पुरानी बात है
कभी-कभी उदास हूँ, सोचती हूँ
चाहूँ नदी से दूध मांग लाऊँ
मन का कर्ज उतार आऊँ

हर [illegible] रहता [illegible] है
यह [illegible] नहीं [illegible]

लाश नू ढुन्दी मुक्ख लाश दी
बाझ ना होवे कुक्ख लाश दी

हारे कुक्ख लाश दी हारे
मोई कुक्ख नू ममता मारे

लाश दा करजा लाह सकदी हां
कुक्ख दा करजा कौण उतारे

कदे कदे मैं उठ्ठा सोचा
कुक्ख दी लाल वही नू पाडा
अपणा दमखत आप छुपावा
इस करजे तो मुक्कर जावा

उठदी पैर दहलीजे रखदी
कुक्ख दी चोरी मारे मैंनू
लाश मेरी दी छाती विच्चा
सिम्म पवे इक बूंद दुद्ध दी

सरदल अपनी था तो हिल्ले
उसदी थावें गैर खलोवे
हझुआ नू कोई तर सकदा ए
दुद्ध दी बूंद पार ना होवे।

रात मेरी

रात मेरी जागदी
तेरा खयाल सौं गया

सूरज दा रुक्ख खडा सी
किरना किसे ने तोडीआ

सास का एक लाल की भूख होती है
सास की कोख बाँझ नहीं होती

सास की कोख हार जाती है
पर पूरी कोख को ममता मारती है

सास का कर्ज उतार सकती हूँ
कोख का कर्ज कैसे उतारूँ ?

कभी-कभी उठती हूँ, सोचती हूँ
कोख का वही ताला फाड़ दूँ
अपने दस्तखत आप ही मिटा दूँ
इस कर्ज से मुकर जाऊँ

उठती हूँ, दहलीज पर पाँव रखती हूँ
कोख की लोरी मुझे मारती है
और मेरी सास की छाती से
दूध की एक बूँद टपक पड़ती है

दहलीज अपनी जगह से हिल जाती है
उसकी जगह पैर टिक जाता है
आँसुओं को कोई गेर सकता है
दूध की बूँद कोई कैसे पार करे ?

रात मेरी

मेरी रात आज रही है
तेरा सपना सो रहा

सूरज का पेड़ उगता था
किरनें के [illegible] [illegible]

चन्न दा गोटा किसे ने
अम्बर तों अज उधेडिआ

किआ किसे दी नींद नू
सुपने बुलावा दे गए
तारे सलोते रह गए
अम्बर ने बूहा ढो लिआ

इह जखम मेरे इश्क दे
सीते सी तेरी याद न
अज तोड़ के टाके असां
धागा वी तैंनू मोड़िआ

कितनी कु दरदनाक है
आज बीड़ मेरे इश्क दी
सभना उडीका दा असां
पत्तरा न्हूदे 'चा पाडिआ

धरती दा हऊका निकलिआ
असमान ने सिसकी भरी
फुल्ला दा सी इक काफिला
तत्ते थलां' चा गुजरिआ

वणक दी इक महिक सी
बारूद ने अज पी लई
ईमान सी इक अमन दा
ओह वी किते विकदा पिआ

दुनिआ दे चानण नू अजे
सदीआं उलाभे देंदीआं
इस प्यार दी रुत्ते तुसां
नफरत नू कीकण बीजिआ

इनसान दा इह खून है
इनसान नू पुच्छदा पिआ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
मज़हब का रंग ईमान का
[illegible]

दुनिया की नादानी में
लोगों शिकवा करते हैं
इस मुहब्बत के मौसम में
तुमने नफ़रत का रंग घोल दिया



यह इन्सान का खून है
इन्सान से सवाल करता है

ईसा दे सुच्चे होठ नू
सूली ने कीकण चुम्मिआ

इह किसतरा दी रात सी
अज दौड के लग्घी जदा
धन दा इक फुल्ल सी
पैरा दे हेठा आ गया

सूरज दा घोडा हिणकिआ
चानण दी काठी लहि गई
उमरा दे पडे मारदा
धरती दा पाधी रो पिआ

इह रात किओ अज त्रहि गई
कालख है कुझ कम्बदी पई
किधर किसे विशवास दा
शाइद टटहिणा चमकिआ

राता दी अक्ख फरकदी
इह खौरे चग्गा सगण है
अम्बर दी उच्ची कध'ते
चानण दा तीला लिशकिआ

की करे टाहणी कोई
फुल्ला दी ममता मारदी
इनसान दी तकदीर ने
इनसान नू अज आखिआ,

हुसना ते इश्का वालिओ !
जावो लिआवो मोड के
विशवास दा इक जातक
जित्थे वी किधरे टुर गया !

ईसा के पाक हाथों को
सूली ने अंग चूम लिया

यह किस तरह की रात थी
आज जब जागकर गुज़री
चाँद का हर फूल था
पैरों तले रौंद गया

सूरज का घोड़ा हिनहिनाया
रोशनी की काठी उतर गयी
उमरों का सफ़र तय करता
धरती का मुसाफ़िर सो गया

यह रात आज क्या ठिठक गयी
सियाही भी कुछ काँप रही
कहीं किसी विश्वास का
शायद जुगनू चमक उठा

रात की ओस कहती है
यह शायद अच्छा शगुन है
आसमान की ऊँची दीवार पर
रोशनी का एक किनारा चमक उठा

कोई टहनी क्या करे
फूलों की ममता सताती है
इन्सान की तक़दीर ने
आज इक़रार सा कहा,

हुस्न और इश्क़वालो !
जाओ, लौट आओ
विश्वास का एक यात्री
जहाँ कहीं भी चला गया

परदेसी

भरे होए ने दोवें बोझे
सारे पौण्ड ते रूबल डालर
लफज जिवें नोटा दीआ थहीआ
पर इह् रकम वदेशी मिक्का

इश्क तेरा मैं किवें खरीदा
बेप्रवाह् माण दे मत्ते
लफज दिआ ते मन दा सिक्का
बदला किहडे काउटर ऊत्ते

मैं आशक असलो परदेसी ।

दाग

कच्ची कन्ध मुहब्बत वाली
लिम्बिआ अते पोचिआ मत्था
फिर वी इसदी वक्खी विच्चो
राती इक खरेपड लत्था

असलो जिवें मुधार हो गया,
कन्ध दे उत्ते दाग प गया

इह् दाग अज हँ हँ करदा
इह् दाग अज बुल्लीहा टेरे
इह् दाग अज अडी पै गया
इह् दाग अज छडीआ मारे

विट विट तक्कदा मेरी वल्ले
अपणी माँ दा मूह् सिआणे

परदेसी

दोनों जेबें भरी हुई हैं
सभी पाउण्ड, रूबल, और डालर
सब्ज़ बैंक नोटों के बण्डल
पर यह रक़म विदेशी सिक्का

तेरा हुस्न मैं न ख़रीदूँ
बेपरवाह और अभिमानी
सच्चा दर्द और मन का सिक्का
कौन से काउण्टर पर बदलूँ

मैं आख़िर बिलकुल परदेसी

दाग

मुहब्बत की कच्ची दीवार
लिपी हुई, पुती हुई
फिर भी इसके पहलू से
रात, एक टुकड़ा टूट गिरा

बिलकुल जैसे सुराख़ हो गया
दीवार पर दाग़ पड़ गया

यह दाग़ आज हूँ हूँ करता
यह दाग़ आज होंठ बिसूरे
यह दाग आज ज़िद करता है
यह दाग कोई बात न माने

टुकुर टुकुर मेरे को देखे
अपनी माँ का मुँह पहचाने

विट विट तक्दा तेरी वल्ले
अपने पिओ दी पिठ्ठ पछाणे

विट विट तक्दा दुनीआ वल्ले
सौण लई पघूडा मग्गे,
दुनीआ दे कानूना कोलो
खेडण लई छणक्णा मग्गे

कुझ ते मुक्खा बोल नी माए
एस दाग नू लोरी देवा
कुझ ते मुक्खो बोल वाबला
एस दाग नू कुच्छड चुक्का

दिल दे वेहडे रात पै गई
एस दाग नू किज सुआवा !
दिल दे कोठे सूरज चढिआ
एस दाग नू किज छुपावा !

अन्नदाता

अन्नदाता !
मेरी जीभ'ते तरा लूण ए
तेरा ना मेरे बाप दिआ होठा ते
ते मेरे इस बुत्त विच
मेरे बाप दा खून ए
मैं किवें बोला
मेरे बोलण तो पहिला
बोल पदा ए तेरा अन्न
कुछ कु बोल सन,

टुकुर टुकुर तेरे को देखे
अपने बाप की पीठ पहचाने

टुकुर टुकुर दुनिया को देखे
सोने के लिए पालना मांगे
दुनिया के कानूनों में
खेलने को झुनझुना मांगे

माँ ! कुछ ना मुँह से बोले
इस दाग़ को लोरी सुनाऊँ
बाप ! कुछ तो कह
इस दाग़ को गोद में ले लूँ

दिल के आँगन में रात हो गयी
इस दाग़ को कैसे सुलाऊँ !
दिल की छत पर सूरज उग आया
इस दाग़ को कहाँ छुपाऊँ !

अन्नदाता

अन्नदाता !
मेरी ज़बान पर तुम्हारा नमक है
तुम्हारा नमक मेरे बाप के होंठों पर
और मेरे इस बुत में
मेरे बाप का खून है
मैं कैसे बोलूँ ?
मेरे बोलने से पहले
तेरा अनाज बोल पड़ता है
कुछ एक बोल थे,

पर असी अन दे कीड़े
ते अन भार-हेठा
ओह दब्बे गए हन

अनदाता !
कामे माँ बाप
दित्ते कामे न जम्म
कामे दा कम्म है
सिरफ कम्म
बाकी वी ता कम्म
कर दै इहो ही चम्म
ओह वी इक कम्म
इह वी इक कम्म

अनदाता !
मैं चम्म दी गुड्डी
खेड लै खिडा लै
लहू दा प्याला
पी लै पिला लै
तेरे साहवें खडी हा अँह
वरतण दी शै
जिवें चाहें वरत लै

उग्गी हा
पिसी हा
गुज्झी हा, विली हा
ते अज तत्ते तवे उत्ते
जिवें चाह परत लै
मैं बुरकी तो वद्ध कुझ नही
जिवें चाहे निगल लै
तू लावे तो वद्ध कुझ नही
जिवें चाह पिघल लै
लावें'च लपेट लै
कदमां'ते खडी हा
बाहवां'च समेट लै

पर हम अनाज के कीड़े
और अनाज के भार तले
वह बोझ दबकर रह गये

अन्नदाता !
मेरे माता पिता कामगर
कामगर की संतान कामगर
कामगर का काम,
सिर्फ काम
बाकी भी तो काम
यही काम करता है,
वह भी एक काम
यह भी एक काम

अन्नदाता !
मैं मांस की गुड़िया
सेज स लिटा ले
लहू का प्याला
पी स पिला ले
तेरे सामने खड़ी हूँ
इस्तेमाल की चीज
इस्तेमाल कर लो

उगी हूँ
पिसी हूँ
बेलन म बिली हूँ
आज गर्म तवे पर
जैसे चाहो उलट लो
मैं एक निवाले से बढ़कर कुछ नहीं
जैसे चाहो निगल लो
तुम लावे से बढ़कर कुछ नहीं
लावे म लपेट लो
पदमा म नहीं
बाँहों में समेट लो

अन्नदाता !
मेरी जबान
ते इनकार ?
इह किवें हो सकदै !
हा प्यार
इह तेरे मतलब दी शै नही

इक गुनाहगार

रोज मन्नदा हा अकल दी
अज ना सही,
रोज कहिंदा हा 'हा'
अज 'नाह' सही

मेरी तोबा !
नील चन्द्र दी घाटी
जित्थे उमरा दे साल
सदीआ पए तग्गदे
सुथरे आकाश वी ता
नित चग्गे नही लगद

नीलीआ रगा दी रत्त
अज फरकदी मेरी
ते मेरे खून वरगी
काली बोली हनेरी
दता जहे परवत
त उत्थे मूह भनदे बदलां दी टक्कर
ते अज मैं तक्का
गुनाहा दी खडड जहीआ
डूघीआ खड्डा

अन्नदाता !
मेरी इनकार
और इकरार ?
यह कैसे हो सकता है !
हाँ प्यार
यह तेरे मतलब की चीज नहीं

इक गुनाहगार

रोज मानता हूँ अक्ल की
आज न सही,
रोज कहता हूँ, 'हाँ
आज 'न' सही

मेरी तौबा !
नील पत्थर की घाटी
जहाँ उमर के गान
नदिया चलते
उजला आकाश भी तो
रोज अच्छे नहीं लगते

नीली वादियों का रुख
आज बदल रहा है
और मेरे सर-जमीं
काली आँधी चढ़ आयी
देव दानव से परवत
यहाँ सर फोड़ते बादलों की टक्कर
और आज मैं देखूँ,
गुनाहों की खाई जैसी
गहरी खाइयाँ

ते उहा विच बद्दल
पाणी हो वगदे
सुथरे आकाश वी ता
नित चगे नही लगदे
रोज मनदा हा अक्ल दी
अज ना सही

समाज दी आवाज है जवान
मेरा खीसा वी है जवान
परचा लवागा
कुछ आखेगा धरम
टेक के मत्था वरचा लवागा

कूएगी रूह
ते पिछले खिआल
मग के साईकालोजी तो कारन
सरचा लवागा

रोज मनदा हा अकल दी
अज ना सही

इडीपस

दहलीज तों उरली तरफ मेरा गुनाह
दहलीज ता परली तरफ मेरी सजा

सोचिआ सो अत सुच्चो
दुद्ध दी इह वाशना
पर होठ जूठे हो गए
होठा दी पहली 'वाज नें
तुतला के जो कुझ आखिआ
उह बोल झूठे हो गए

और उलझ बादल
पानी की तरह बहते
उबले आकाश भी तो
निज अक्सों नहीं लगत
रोज मानता हूँ अक्ल की
बात न सही

समाज की आवाज जवान है
मेरी जेब भी जवान है
परचा दूँगा
धर्म कुछ कहेगा
माथा टेककर कहता सुनूँगा

आत्मा कुछ कहेगी
सरकार कुछ बोलेंगे
मनोविज्ञान से कारण माँगकर
उन्हें भी चुप करा दूँगा

रोज मानता हूँ अक्ल की
बात न सही

इडीपस

दहलीज के इस तरफ़ मेरा गुनाह
दहलीज के उस तरफ सजा

सोचा था बहुत शुच्ची
दूध की यह महक
हर हाथ जूठे हो गये
होठों की पहली आवाज ने
तुतला कर जो कुछ कहा
वे बोल झूठे हो गये

अज अक्ख दे परदेस विच
लभदा हा अपनी नज़र नू
नज़र शरमिंदी मिरी
डरदी है सुपना जोड़ के
डरदी है सुपना तोड़ के
साहमणे हुंदी नहीं

जिस हनेरी रात विच
मालक सा सारी कुक्ख दा
अज ओह हनेरा ढल गया
अज डग्ग दित्ता जिसम ना
वानण दे काले नाग ने
इक जहर है चडदा पिआ

हुण शायद मैं सारी उमर
जिसमा द चिक्कड फोल के
लॅभागा एस इश्क नू
वरजित अवरजित मास विच
लॅभागा एसे महिक नू
लॅभागा एस मुशक नू

इह की पता किसदी रज़ा !
दहलीज़ तो उरली तरफ मेरा गुनाह
दहलीज़ तो परली तरफ मेरी सज़ा

लगडी छा

रुक्खा दी एक पाल खलोती

जा अड्डी विच रोड़ा चुभ्भा
जा गिट्टे नू लोच आ गई
जा गाडे चप्पणी टुट्टी

आज मौत के दरवाज़े पर
अपनी नज़र को ढूँढता हूँ
नज़र जाविदाना मेरी
डरती है गहरा ओढ़कर
डरती है गहरा गाढ़कर
गाम। आओ ना।

जिस अँधेरी रात में
शायद था सारी सोच का
वह अँधेरा बन गया
आज छा गया है जिस्म में
सूरज के पास नाम न
इस कदर है अब पड़ा

अब शायद मैं सारी उम्र
जिस्म के कीचड़ में हाथ डाल
ढूँढूँगा इसी छल्ले में
अर्जित-अनर्जित भोग में
ढूँढूँगा इसी महक में
ढूँढूँगा इसी गन्ध को

क्या जानूँ यह किसकी रज़ा !
दहलीज़ के इस तरफ़ मेरा गुनाह
दहलीज़ के उस तरफ़ मेरी सज़ा

लँगड़ाता साया

दरअसल यही रफ़्तार सही है

या एड़ी में कंकड़ चुभ गया है
या टखने में मोच आ गयी है
या घुटने में दरद आ गयी है

जा मोडढे दी हड्डी उतरी
जिऊँ जिऊँ टाहणी कदम वधावे
तिऊँ तिऊँ उसदा पैर लगावे

हर इक कूला टाहणी पिच्छे
सुक्की लक्कड दी इक टोहणी
जा बाहवा दा गुट्ट भज्जिआ
जा बाहवा दी भज्जी कूहणी
तारा इज पलचीआ गईआ
जुलफा विच अडकाहवा पईआ

जिन्ने लवे रुक्ख दे पत्ते
उन्ने लवे कुक्ख दे पत्ते
माली जिन्नीआ जाचा वाला
रुक्ख उ नीआ गडढा वाला
जिऊँ जिऊँ टाहणी पर वधाव
तिऊ तिऊँ उसदी छा लगावे

मुडीए तुडीए कुब्बे होईए
गुच्छा करीए अग आपणे
किसे रुक्ख दी छावें बहीए
ते उस रुक्ख द मत्थे अदर
जिहडा वी कोई फुल्ल खिडेगा
आओ ओस फुल्ल नू रोईए !

इक नगर
(इक दिन)

मीह कदा दा थम चुक्का ए

सारा नगर घडी कु पहिला
चिक्कड दे विच डिग्ग पिआ सी

या बच्चे की हड्डी टूट गयी है
जितना टहनी कदम बढ़ाती है
उतना ही उसका पाँव लँगड़ाता है

हर मासूम टहनी के पीछे
भूखी मकड़ी की एक थैली है
शायद कलाई उतर गयी है
शायद कुहनी टूट गयी है
सारे तार गड़बड़ हो गये हैं
सारी नसें उलझ गयी हैं

जितने कोमल पत्ते पले हैं
उतने कोमल पोर भी पके हैं
साथी जितना सयाना होगा
दरख्त उतना गाँठवाला होगा
जितना टहनी कदम बढ़ायेगी
उतना ही ज्यादा लँगड़ायेगा

आओ, हम मुड़-तुड़ के कुबड़े हो जायें
अपने अंग इकट्ठा कर लें
किसी दरख्त के साथ में बैठें
और उस दरख्त के साथ पर
जो भी कोई फूल खिलेगा
आओ, उस फूल को रो लें!

एक नगर
(एक दिन)

यह सब था थम चुका है

सारा नगर पल भर पहले
कीचड़ में गिर गया था

तलीआ परों मगा उठिआ
जिम कडी ते बाहना रगदा
जिम टुट्ट ते पैर टिकाण
कोई बास बबली विच्च धरना
मसा लक्ख नू सिद्धा करदा
सडे होण नू जूझ रिहा ए
मीह कदों दा थम चुक्का ए
इह मत्थे ता, पुडपुडीआ तो
अजे वी मुडका पूझ रिहा ए

एस नगर वी सुपन औंद
किन्नीआ वी सोना नू भीटो
फिर वी अदर आ जादे ने
किधरे सगमरमरी बादो
दरस थोम दी पा जाद ने

सारा नगर उन्हा दे आखे
नीदर दे विच तुर पदा ए
दूर भविख दा गाहली गाहली
कुछ रमता तैह कर लदा ए

फिर रसते विच सूरज दा
इक अड्डी खोडा इसनू लग्गे
टुट जाए गोडे दी चप्पणी
अरका दे विच्चो लहू वग्गे

वरतमान दी बद गली
ते दुक्ख सुक्ख दी कद्ध साहमणे

रात कराते जिन्ही पैरी
जिहडे वी रसते ते जादा
सुबह सवेरे ओन्ही पैरी
उसे रसतिओ मुडके औदा

इज हमेशा एथा तुरदा
अते हमेशा एथे रहिंदा

हथेलियों के बल मुश्किल से उठा
किसी तहरीर पर बाजू रखता
किसी ईंट पर पाँव टिकाता
कोई बोझ बगल में लेता
मुश्किल से कमर सीधी करता
खड़ा हुआ था खूब रंग है
यह कब का मर चुका है
यह माथे और कनपटियों से
अभी तक पसीना चाट रहा है

इस नगर में भी गया आया है,
गाँव के विवाद जितना ही भरना
वह फिर भी अन्दर आ जाता है
कहीं कोई समाचार की बाढ़ है
वह उसका पता न जाने

नक्शा जगह उसका बना मानकर
नींद में घर देता है
दूर भविष्य का जल्दी-जल्दी
कुछ रास्ता तय कर लेता है

फिर रास्ते में सूरज की
एक ठोकर इस लगती है
घुटन पर चोट आती है
कुहनियों से खून टपकता है

वर्तमान की कड़ी मनी
सामने धूप और भूख की दीवार

रात में समय जिन पैरों
जिस रास्ते पर भी जाता है
सुबह से थका उन्हीं पैरों
उसी रास्ते लौट आता है

यूँ हमेशा यहीं से चलता है
और हमेशा यहीं रहता है

(ते फेर इक दिन)

रात नदो की लग्ध चुकी ए
सारा नगर चौंकडी मारी
इक फलसफी वागू बैठा

ना कोई गल्ल सुणे ना आखे
ना कोई इसदे मत्थे उत्ते
लीक हरख दी, लीक शोक दी

जा ता इसने वरतमान दी
बद गली दा भेत बुझिआ
इक फलसफी वागू वठा
वे जा अज दे मीह् विच ढठठा

मीह् कदा दा थम चुक्का ए

इक शहर

1

जेहडी फसल तारिआ बीजी
किसने चोर गुदामी पाई
बद्दल दी वोरी नू झाडा
रात दी मडी उड्डन घट्टे

च दरमा इक भुक्खा वच्छा
सुक्के थण नु मूह् मारदा
धरती-माँ किल्ले 'ते वज्झी
अदर दी खुरली नू चट्टे

(और फिर एक दिन)

रात कभी की गुज़र चुकी है
सारा नगर आलती-पालती मार
इक पगमर्दी की तरह बैठा हुआ है

न कोई बात सुनता है न कहता है
न इसके माथे पर
कोई दुख की रेखा है न ही कोई शोर की रेखा

या तो इसने वक़्त की
बद-हवा का भेद पा लिया है
और इस पगमर्दी की तरह बैठा हुआ है
या फिर आज यह भी गिर गया है

यह सब का सब चुका है

एक शहर

1

वह फसल जो सितारों ने बोयी थी
जिसने इसे चोर गोदाम में डाल लिया
बादल की बोरी को झाड़कर देखा
रात की मण्डी में गर्द उड़ रही है

चाँद एक भूखे बछड़े की तरह
सूखे थन को निचोड़ रहा है
धरती माँ अपने थान पर बँधी
आकाश की चरनी को चाट रही है

2

हसपताल दे बूहे अग्गे
हक्क, सच, ईमान ते कदरां
किन्ने लफ्ज़ बीमार पए ने
भीड़ जही इक लग्ग गई ए

खबरे कोई लिखेगा नुसखा
खबरे नुसखा लग्ग जावेगा
पर हाली ता इज जापदा
अउध इन्हा दी पुग्ग गई ए

3

एस शहर दे विच्च इक्क थावें
थां कि जित्थे रहण निथावें
जिस दिन कोई ना मिले मजूरी
उस दिन जिन्द उन्हा दी चूरी

पहली रात बुढेपे वाली
कन्ना दे विच आ के कह गई
कि एस शहर दे विच उन्हा दी
अह्लल जवानी चोरी हो गई

4

कल रात कहर दा पाला
अज तडके सवा रामती नू
सडक दे उत्तो लाश मिली है
नाओ थाओ कुछ पता ना लग्गे

मढीआ दे विच अग्ग पई बलदी
कोई ना एस लाश नू रोइआ
जा कोई मोइआ है इक भगता
जा कोई शाइर फलसफा मोइआ

2

सरकार के दरवाजे पर
हर, गम, ईमान और चहरें
जो सिरे ही सब बीमार पड़े हैं
एक भीड़-सी इकट्ठी हो गयी है

जाने कोई नुस्खा लिखेगा
जो यह नुस्खा लग जायगा
लेकिन अभी तो ऐसा लगता है
दवा दिन दूर हो गए हैं

3

इस शहर में एक घर,
घर कि जहाँ बेघर रहते हैं
जिस दिन कोई मजदूरी नहीं मिलती
उस दिन वह परेशान होते हैं

बुढ़ापे की पहली रात
उनके बातों में धीरे से भर गयी
कि इस शहर में उतरी
भरी जवानी चोरी हो गयी

4

कल रात बला की सर्दी थी
आज सुबह सेवा-समिति को
एक लाश सड़क पर पड़ी मिली है
नाम व पता कुछ भी मालूम नहीं

श्मशान में आग जल रही है
इस लाश पर रोनेवाला कोई नहीं
या तो कोई भिखारी मरा होगा
या शायद कोई फलसफा मर गया है

5

किसे मरद दी बुक्कल दे विच
किसे कुडी ने चीक मार के
पिड्डे तो इक पच्चर लाही

थाणे दे विच हासा मचिआ
काहवाघर विच ही ही होई

सडका ते कुछ हाकर फिरदे
इक इक पैसे खबर वेचदे
रहिंदा पिड्डा फेर नाचदे

6

गुलमोहर द रुखा हेठा
लोकी इक दूजे नू मिलदे
बडी जोर दी हसदे गऊदे
इक दूजे तो अपनी अपनी

मौत दी खबर छुपाना चाहुदे
चिट्टा जिहा कबर दा पत्थर
हत्या दे विच्च चुस्की फिरदे
अते लाश दी राखी करदे

7

खडखड खडखड करन मशीना
शहर जिवें इक छापाखाना
हर इक बन्दा एस शहर दा
इक इक कल्ले अक्खर वागू

हर पैगम्बर—कम्पोजीटर
अक्खर मेल मेल क वेगे
अक्खरा द विच अक्खर उणदा
बदे बाई फिकरा ना बणदा

5

किसी सड़क के आसमान में
कोई लड़की चीख उठी
जैसे उसके कंठ से सुख टूट गिरा हो

कान में एक कहकहा घुमड़ हुआ
फुटपाथ में एक हँसी बिखर गयी

सड़कों पर कुछ लोग फिर रहे हैं
एक-एक पैसे में खबर बेच रहे हैं
बचा-खुचा जिस्म फिर से नोच रहे हैं

6

गुलमोहर के पेड़ तले,
लोग एक-दूसरे से मिलते हैं
प्यार से हँसते हैं गाते हैं
एक-दूसरे से आगे-आगे

मौत की खबर सुनाना चाहते हैं
संगमरमर क़ब्र का ताबीज़ है
हाथों पर उठाये-उठाये फिरते हैं
और अपनी लाश की हिफ़ाज़त कर रहे हैं

7

मशीनें खट-खट कर रही हैं
शहर जैसे एक छापाखाना है
इस शहर में एक-एक इन्सान
एक एक अक्षर की तरह अकेला है

हर पैगम्बर एक कम्पोज़ीटर
अक्षर जोड़ जोड़कर देखता है
अक्षरों में अक्षर चुनता है
कभी कोई कविता नहीं बन पाता

8

दिल्ली एस शहर दा नाओ
कोई नाओ वी हो सक्दा ए
(नावा दे विच्च की पिआ ए !)
रोज़ भविख दा सुपना राती

वरतमान दी मैली चादर
अद्धी अपने ऊपर ताणे
अद्धी अपने हेठ विछावे
बिना चिर वुझ सोचे, जागे
फिर नींदर दी गोली खावे

तीसरी कसम

8954

जिन्द-कुडी तू कसम पहिलडी
'बली' नाआ दा इक सी बन्दा
आप हूंदरा अक्खड, छिन्दा

पहिला सच्च जिहदा सी 'हूरा'
अन्तिम सच्च जिहदा सी 'मुक्का'

जिन्द-कुडी दा मास चक्ख के
मुट्ठी दे विच सोना देके
छाती उत्ते पैर रक्ख के
ज़री दुशाले ताण बोलिआ—

'तू मेरी हुशरा तो तीवी
तू मेरे लई जम्मी जीवी
तू ना होर किस दी होवी"

8

दिल्ली इस शहर का नाम है
कोई भी नाम हो सकता है
(नाम में क्या रखा है!)
भविष्य का सपना रोज रात को

वर्तमान की मैली चादर
आधी ऊपर ओढ़ता है,
आधी नीचे बिछाता है,
कितनी देर कुछ सोचता है, जागता है
फिर नींद की गोली खा लेता है

तीसरी कसम

जिन्द-कुड़ी की पहली कसम
'बलि' नाम का एक आदमी था
अक्खड़ और बेलगाम

जिसका पहला सच था 'ठहाका',
आखिरी सच था 'भुखरा'

जिन्द-कुड़ी का मांस चखकर
मुट्ठी में सोना देकर
छाती पर पाँव रखकर,
जरी दुशाले तानकर बोला,

"तू मेरी युग-युग से तिरिया
मेरे लिए जीना मरना
और किसी की तू मत होना।"

एना कह के, कसम खुआ के
जिंद-कुडी नू महली पा के
चौपट खेडण बैठ गया उह

जिंद-कुडी नू कसम दूसरी
'वली' नाओ दा इक सी बंदा
जिसने बगली दे विच पाइआ

इक भरोसा नेतर हीणा
इक चेतना सेधो हीणी

रिद्धी दा इक धागा लैके
सिद्धी दी इक सूई लैके
जिंद-कुडी दी जीभ सीऊँ के
कन्ना विच गुरमतर दित्ता

"भटकी होई आतमा बच्चा !
जो कुझ दिस्से ओहीओ कच्चा
जो ना दिस्से ओहीओ सच्चा ।"

एना कह के, कसम खुआ के
जिंद-कुडी नू भोरे पा के
लाण समाधी बैठ गिआ उह

भुक्खी पिआसी जिंद कुडी ने
सोने नू इक चक्क मारिआ
मिट्टी नू इक चक्क मारिआ
दोवें कसमा भन्न के बोली

'मेरे अपणे मत्थे अंदर
तीजा नेतर खुल रिहा है
दूर सजण ते राह दुहेला
आपे गुरु ते आपे चेला
तीजी कसम खाण दा वेला"

इतना कहकर कसम दिलाकर
जिन्द-कुड़ी को महल में लाकर
वह चौपड़ खेलने बैठ गया

जिन्द-कुड़ी की दूसरी कसम
'कलि' नाम का एक आदमी था।
जिसने अपनी काली में रखे थे

एक भरोसा दृष्टिहीन
एक चेतना दिशाहीन

सिद्धि का एक धागा लेकर
सिद्धि को लग गई नज़र
जिन्द-कुड़ी की जीभ को सीकर
कानों में गुरु-मन्त्र दिया

"भटकी हुई आत्मा बच्चा!
जो दिखता है वह है कच्चा,
जो नहीं दिखता वह है सच्चा।"

इतना कहकर कसम दिलाकर,
जिन्द-कुड़ी को कोठरी में डालकर
वह समाधि लगाकर बैठ गया

भूखी-प्यासी जिन्द कुड़ी ने
सोने को परखकर देखा
मिट्टी को चखकर देखा
दोनों कसम तोड़कर बोली

"मेरे अपने माथे अन्दर
तीसरा नेत्र खुल रहा है—
दूर सजन और राह दुहेला
आप गुरु और आप ही चेला
तीसरी कसम खाने की वेला!"

खण्ड—3

वारिस शाह नूँ।

अज आखा वारिस शाह न
कितो कबरा विच्चो बोल।
ते अज किताबे इश्क दा
कोई अगला वरका फोल।

इक रोई सी धी पजाब दी
तू लिख लिख मारे वैण,
अज लक्खा धीआ रोदीआ
तैनू वारिस शाह नू कहण

उठ दरदमन्दा दिआ दरदीआ
उठ तक अपणा पजाब
अज बेले लाशा विछीआ
ते लहू दी भरी चनाब

किसे ने पजा पाणीआ विच
दित्ती जहिर रला
ते उन्हा पाणीआ धरत नू
दित्ता पाणी ला

इस जरखेज जमीन ने
लू लू फुट्टिआ जहर
गिठ गिठ चढीआ लालीआ
ते फुट फुट चडिआ कहर

विछु वल्लिसी वा फिर
वण-वण वग्गी जा
हर इक वांस दी वझली
दित्ती नाग वणा

नागा कीले लोक मूह
बस फिर डग ही डग
पलो पली पजाब द
नीले पै गए अग

गलिआ टुट्टे गीत फिर
तवलिओ टुट्टी तन्द
त्रिजणो टुटीआ सहेलीआ
चरखड़े घूकर बन्द

सणे सेज दे बेडीआ
लुडडण दित्तीआ रोहड
सणे डालीआ पीघ अज
पिपला दित्ती तोड

जित्थे वजदी फूक प्यार दी
वे ओह वझली गई गुआच
राझें दे सभ वीर अज
भुल गये उसदी जाच

धरती ते लहू वस्सिआ
कबरा पईआ चोण
प्रीत दीआ शाहजादीआ
अज विच मजारा रोण

अज सभे 'कैदो' बण गये
हुसन इश्क दे चोर
अज कित्थो लिआईए लभ के
वारिस शाह इक होर

बाँसुरी बजाना भूल गये

धरती पर लहू बरसा
कब्रों में खून टपकने लगा
और प्रीत की शहजादियाँ
मजारों में रोने लगीं

आज जैसे सभी 'कैदो' बन गये
हुस्न और इश्क के चोर
मैं कहाँ से ढूँढ़ लाऊँ
एक वारिस शाह और

अज आखा वारिस शाह नूं
किता ममरा विच्चों बोल !
ते अज किताब इश्क दा
कोई अगला वरका फोल !

मजबूर
(1947)

मेरी मा दी कुक्ख मजबूर सी
मैं भी ता इक इनसान हा
अजादीआ दी टक्कर विच्च
इक सट्ट दा निशान हा
उस हादसे दा चिह्न हा
जो मा मेरी दे मत्थे उत्ते
लगणा जरूर सी
मेरी मा दी कुक्ख मजबूर सी

धिरकार हा मैं उह जिहडी
इनसान उत्ते पै रही
पैदाइश हा उस वक्त दी
जद टुट रहे सी तारे
जद बुझ गया सी सूरज
ते चन्न वी बेनूर सी
मेरी मा दी कुक्ख मजबूर सी

मैं खरीड हा इक जखम दा
मैं धब्बा हा मा दे जिसम दा
मैं जुलम दा उह बोझ हा
जो मा मरी ढोदी रही
मा मेरी नू पट 'चा
सडिआद इक औंदी रही

वारिस शाह! मैं तुमसे कहती हूँ
अपनी कब्र से उठो
और दरद की किताब का
कोई नया वरक खोलो।

मजबूर

(1947)

मेरी माँ की कोख मजबूर था
मैं भी तो एक इंसान हूँ
आज़ादियों की टक्कर में
उस चोट का निशान हूँ
उस हादसे की लकीर हूँ
जो मेरी माँ के माथे पर
लगनी जरूर थी
मेरी माँ की कोख मजबूर थी

मैं वह लानत हूँ
जो इन्सान पर पड़ रही है
मैं उस वक्त की पैदाइश हूँ
जब तारे टूट रहे थे
जब सूरज बुझ गया था
जब चाँद की आँख बेनूर थी
मेरी माँ की कोख मजबूर थी

मैं एक ज़ख्म का निशान हूँ
मैं माँ के जिस्म का दाग हूँ
मैं ज़ुल्म का वह बोझ हूँ
जो मेरी माँ उठाती रही
मेरी माँ को अपने पेट से
एक दुर्गन्ध सी आती रही

कौण जाण सकदा है
कितना मुश्किल है
आखरां दे जुलम नू
इक पेट दे विच पालणा
अगां नू झुलसणा
ते हड्डां नू बालणा
फन हा उस वक्त दा मैं
आजादी दीआ बरीआ नू
पै रिहा जद बूर सी
मेरी मा दी कुक्ख मजबूर सी

हवाड

(नवम्बर 1962)

इक दोसती दे फुल्ल 'चो
आई हवाड खून दी
अक्ला दा मत्था ठणकिआ
तहज़ीब दे इखलाक दे
पिण्डे 'त मुढ़का आ गया
त आपणे दन्दा दे हेठा
जीभ टुक्की अमन ने
अमन दी इक सहुँ ने

इक दोसती दे फुल्ल 'चो
आई हवाड खून दी
सुन्घी है काली रात ने
सुन्घी है चिट्टे दिहुँ ने

इह खून है विश्वास दा
नाडा च खौल जायेगा
डुल्लेगा मिट्टी चुम्म के
उग्गेगा मौल जायेगा

कौन था। जिसका मुजरिम है
पेट में एक जुगनू को पालता
अंग अंग को झुलसाता
और हड्डियों को जलाता
मैं उस वक्त का पल हूँ
जब आज़ादी के पेड़ पर
बौर पड़ रहा था
आज़ादी बहुत पास थी
बहुत दूर थी
मेरी माँ की कोख मजबूर थी

गन्ध

(नवम्बर, 1962)

एक दोस्ती के फूल से
खून की गन्ध आयी
अक्ल का माथा ठनका,
तहज़ीब में और इन्सानियत में
अमन पर पसीना आ गया
अमन ने, और अमन के यार ने
अपनी ज़बान दांतों तले दबा ली।

एक दोस्ती के फूल से
खून की गन्ध आयी
इस गन्ध को काली रात ने सूंघा
इस गन्ध को उजले दिन ने सूंघा

यह विश्वास का खून है
रगों में लौट जायगा
बहेगा मिट्टी चूमकर
उगेगा, और फैल जायगा

उठेगी इसदी वाशना
कणका 'च फैल जायेगी
उठेगी इसदी वाशना
कलमा 'च फैल जायेगी

इह वाशना इतिहास दे
साहवा चो औंदी रहेगी
कि खून दी इह वाशना
वारस है साडे जखम दी

इह जखम, जु इतिहास दी
छाती ते खुणिआ जायेगा
इतिहास, जिहडा खून दे
इस अमल ता शरमायेगा

इह खून, जा इनसान दे
हत्था 'चो वगदे जा रह
इह जखम, जो इनसान दे
हत्था ते लगदे जा रहे

इह ओही सोहणे हत्थ ने
जो फुल्ला नू बीज सकदे ने
इह ओही आशक हत्थ ने
जो हुसना ते रीझ सकदे ने

इह ओही हुनरी हत्थ
जो साजा नू छेड सकदे ने
इह ओही किरती हत्थ ने
जो सुपने जोड सकदे ने

इह हत्थ पाणी पौण ते
अगनी नू बन्ह सकदे न
सूरज दा चुल्हा बाल के
हांडी नू रिन्ह सकद ने

इसकी गन्ध उठेगी
गेहूँ में दूध आयेगी
इसकी गन्ध उठेगी
कलमों में दूध आयेगी।

यह गन्ध इतिहास के
सीनों में बसी रहेगी
कि खून की यह गन्ध
हमारे जन्म की साक्षी है

यह जन्म इतिहास के
सीने पर खुद जायेगा
और खून के इस अमल पर
इतिहास शर्मिन्दा रहेगा

यह खून जो इन्सान के
हाथों से बहते आ रहे
यह ज़ख्म जो इन्सान के
हाथों पर लगते आ रहे

यह वही प्यारे हाथ हैं
जो सूर्य को उगा सकते हैं
यह वही आशिक हाथ हैं
जो हुस्न पर रीझ सकते हैं

यह वही हुनरी हाथ हैं
जो साज़ों को छेड़ सकते हैं
यह वही कर्मी हाथ हैं
जो सपने जोड़ सकते हैं

यह हाथ पानी पवन और
अग्नि को बांध सकते हैं
सूरज का चूल्हा जलाकर
हांडी को रांध सकते हैं

ईहे हत्थ जो धरती दीआं
जुलफा सँवार सकदे ने
इह ओही सोहणे हत्थ
जो दुनीआ उसार सकदे ने

फुल्ला ते जुलफा दी कसम
हत्था ते जखम लाओ ना
इह कारव दे हत्थ ने
कातिल बणाओ ना

अज हत्थ देवो साथीओ
कि हत्था दी राखी वासते
उह हत्थ जो जाबर बणे
अज मोड दित्ते जाणगे
उह हत्थ जो कातिल बणे
अज तोड दित्ते जाणगे

27 मई, 1964

इह किसतरा दी रात सी !
इह किसतरा दी बात है !
नीदर सी अज केहो जही
सुपने दा मत्था ठणकिआ

चरखा जु भज्जा चन दा
पच्छी 'चो तारे ढह पए
धरदी दे कम्बदे हत्थ 'चा
पूणी नू किसने खोह लिआ !

इतिहास न हऊका लिआ
समया ने तकिआ सहम के

यह हाथ जो धरती को
सुनहरे सँवार सकता है
यह वही प्यारे हाथ हैं
जो दुनिया उभार सकते हैं

फूलों और फसलों की कसम
हाथों पर कलंक न लगाओ
यह कारामद हाथ हैं
इन्हें कातिल न बनाओ

आज हाथ दो ओ साथियो
कि हाथों की हिफाजत के लिए
यह हाथ जो कातिल बने
आज साठ दिन आयेंगे
यह हाथ जो कातिल बना
आज साठ दिन आयेंगे

27 मई, 1964

यह किस तरह की रात थी !
यह किस तरह की बात है !
आज भोर कैसी थी
कि सपनों का माथा ठनक उठा

चाँद का चर्खा टूट गया
टोकरी से तारे गिर पड़े
धरती के काँपते हाथ से
प्याली को किसने छीन लिया !

इतिहास ने गहरी साँस ली
वक्त ने सहमकर देखा

पूरब दी काली अबरा विच
सूरज दा अथरु लिशकिआ

इक मन मेरे दा महल सी
पै गई अचानक भऊजली
इह गीत है वेहो जिहा !
जु सघ दे विच अटकिआ

अबर दी चादर पाड़ के
कफन कोई देंदा पिआ,
इह लाश विहड़े फुल्ल दी
अज बाग सारा रो पिआ

चानण दी सूई
(27 मई 1964)

सारी किममत उधडी होई
देस मेरे दा कज्जण पाटा
मंगदा इक चानण दी सूई

वक्त महा सागर सी कोई
घोर हनेरा रिड़क रिड़क के
आखर चौदा रतना वागू
लभ लई चानण दी सूई

हर सगराम जिवें इक धागा
हर मुरना धागे नू रगे
जिन्दडी दा मैं पीहड़ा डाहिआ
किसमत दी फुलकारी छोही

सूरज की बात ही आँख में
सूरज का आँसू चमक उठा

मन का एक मुहरा था
अखबार टूटकर गल गयी
यह आज का भीर बैठा है !
घर गया में अपना रहा

आसमान की चादर फाड़कर
कोई बच्चा रो रहा है
पर किस धूप की बात है
आज सारा आग का दिया

रोशनी की सूई
(27 मई 1964)

सारी हिम्मत उधड़ी हुई
मेरे मन की आइना फटी हुई
रोशनी की एक सुई माँगनी थी

बड़ा एक महासागर था
घोर अन्धकार का मन्थन किया
और आखिर चौदह रत्नों की तरह
रोशनी की सुई ढूँढ निकाली

हर मकाम जैसा एक धागा था
हर सपना धागे को रंग देता
मैं जीवन का पीड़ा डालकर
किस्मत की फुलकारी काढ़ने लगी

पहिला फुल्ल सुतंतरता दा
फुल्ल दूसरा लोकराज दा
सत्त डंडीआं सत्तर वेला
तीजा फुल्ल खुशहाली वाला

माण मत्तीआं रंग रत्तीआं
धम्म जिवें रान चई पत्तीआं

टूणे हुणे मैं इस फुलकारी
चिट्टा फुल्ल अमन दा छोहिआ
हाए मैं मर गई
इह की होइआ

हत्थ फुलकारी पकड़ी होई
धागा पाण लगी सा कोई
कम्ब गया पीहड़ी दा पावा
टुट्ट गई चानण दी सूई

इक गीत
(15 अगस्त 1965)

इक बेड़ीआं दा गीत सी
हत्थकड़ीआं दा गीत सी
सरगम सी साडे इश्क दी
'जेल' पंचम स्वर सी
ते सतवां स्वर 'सूली' सी
होठ तड़प उठठे सन
बहुत-बहुत मुशकिल सी
पर असां गीत गाया सी

पहला फूल रातरानी का
दूसरा फूल मोरपंख का
धार टहनियाँ और मरोड़ कर में
तीसरा फूल गुलदाउदी का

माँ का माथा, रंग न छूआ
भावनाएँ अब भई पतियाँ

अभी अभी मैं उन फूलदारों में
अमा का चिट्ठा पर नाचने लगी थी
हाय, मैं मर गयी !
यह क्या हुआ—

हाथ में फूलदारी पकड़ी रह गयी
मैं पागल होने ही लगी थी
पीछे का पाया टूट गया
और रातरानी की सूई टूट गयी

एक गीत
(15 अगस्त 1965)

उन घड़ियों का गीत था
हथकड़ियों का गीत था
हमारे हृदय की धड़कन थी
जब पंचम स्वर था
और सातवाँ स्वर सूनी था
होंठ तड़प उठे थे
बहुत-बहुत मुश्किल था
पर हमने गीत गाया था

पहिला फुल्ल सुतंतरता दा
फुल्ल दूसरा लोकराज दा
सत्त डंडीआ सत्तर वेला
तीजा फुल्ल खुशहाली वाला

माण मत्तीआ रंग रत्तीआ
कम्म जिवें सन कई पत्तीआ

हुणे हुणे मैं इस फुलकारी
चिट्टा फुल्ल अमन दा छोहिआ
हाए मैं मर गई
इह की होइआ

हत्थ फुलकारी पकड़ी होई
धागा पाण लगी सा कोई
कम्ब गया पोहडी दा पावा
टुट्ट गई चानण दी सूई

इक गीत

(15 अगस्त 1965)

इक बेडीआ दा गीत सी
हत्थकडीआ दा गीत सी
सरगम सी साडे इश्क दी
'जेल' पंचम स्वर सी
ते सतवां स्वर 'सूली' सी
होठ तड़प उठदे सन
बहुत-बहुत मुश्किल सी
पर असां गीत गाया सी

पहला फूल स्वतन्त्रता का
दूसरा फूल लोकराज का
सात टहनियां, और सत्तर बेलें
तीसरा फूल खुशहाली का

मान की माली, रंग में डूबी
योजनाएँ जैसे कई पत्तियाँ

अभी अभी मैं इस फुलकारी मे
अमन का चिट्टा फूल काढने लगी थी
हाय, मैं मर गयी।
यह क्या हुआ—

हाथ में फुलकारी पकडी रह गयी
मैं धागा डालने ही लगी थी
पीछे का पाया कांप गया
और रोशनी की सूई टूट गयी

एक गीत
(15 अगस्त 1965)

एक बेडिया का गीत था
हथकडिया का गीत था
हमारे दर्द की सरगम थी
'जेल' पहला स्वर था
और सातवां स्वर सूली था
होंठ तडप उठे थे
बहुत-बहुत मुश्किल था
पर हमने गीत गाया था

इक बेडीआं दा गीत सी
हथकडीआं दा गीत सी
ते उह वी वक्त सी
आवाज नज़रबन्द सी
इह हुक्मा दे हुक्म मोडदा
पैरा दा लोहिआ तोडदा
तै गौण सुनण वालिआ दे
मूह ते लाली धूडदा
सारे देस विच विचरदा रिहा
गलीआ दे विच फिरदा रिहा
ते गरम सुच्चा लहू बण के
रगा विच तुरदा रिहा

रहमत है ओसे गीत दी
नेहमत है ओसे गीत दी
कि बेडीआ दा गीत अज
पैरा दा गीत है
पैरा दी मजिल दा गीत है
ते कडीआ दा गीत अज
हत्था दा गीत है
हत्था दी मिहनत दा गीत है

सरगम है साडे इश्क दी
मिहनतकशा दे इश्क दी
हुक्म पचम स्वर है
ते सतवा स्वर सुततरता

हक्क लैणा—हक्क देणा
ते सुततरता ना सोहणी ना खुहाणी
इक्को राग दी रोही अवरोही

एक बेडिया का गीत था
हथकडियो का गीत था
और वह भी वक्त था
आवाज नजरबन्द थी
यह सभी फरमान टालता
पैरो का लोहा काटता
और सुननेवाला के
चेहरो पर सुर्खी छिडकता
सारे देश मे घूमता रहा
गलिया मे फिरता रहा
और गम सुच्चा लहू बनकर
रगो मे चलता रहा

रहमत है उसी गीत की
नेहमत है उसी गीत की
कि बेडिया का गीत
आज पैरा का गीत है
पैरा की मजिल का गीत है
हथकडिया का गीत
आज हाथा का गीत है
हाथा की मेहनत का गीत है

हमारे इश्क की सरगम है
मेहनतकशा के इश्क की
'हक' पचम स्वर है
और सातवाँ स्वर 'स्वतन्त्रता'

हक लेना और हक देना
स्वतन्त्रता न छीननी, न छिनवानी
एक ही राग की आरोही-अवरोही

बहुत—बहुत मुश्किल है
पर असां गीत गाणा है
भरी महफिल वालिओ
इह गीत बहुत सुच्चा है
अज साज़ अपणे कोल ने
आवाज़ अपणे कोल है
पर गीत दी विरासत दा सवाल है
राग दी अज़मत दा सवाल है

याद रखणा एस विच्च
इक स्वर वरजित वी हुंदा ए।

शतरज
(सितम्बर 1965)

तरे कोल नफरत दी सिगरट
मेरे कोल सिगरट दा लाईटर
आ तरी सिगरट जला दिआं
इक बडा डूंघा साह भरी
ते फेर इसदा खुमार वेखीं
रूह लरज़ जायेगी
पैर झूम उठ्ठेगा
ते सारी दुनीआ
नाचीज़ नज़र आयेगी

तेरे वडडे वडेरे
पग्गां वटादे सन
हुक्के वटादे सन
छापां वटादे सन
मेरे वड्डे वडेरे
साह दीआं पलीआं वटादे सन
लहू दीआं चुलीआं वटादे सन

बहुत-बहुत मुश्किल है
पर हमको गीत गाना है
भरी महफ़िलवालो !
यह गीत बहुत सच्चा है
अब साज़ अपने पास हैं
आवाज़ अपने पास है
पर गीत की क़िस्मत का सवाल है
राग की अज़मत का सवाल है

याद रखना इसमें
एक स्वर वर्जित भी होता है।

शतरंज

(सितम्बर 1965)

तेरे पास नफ़रत की सिगरेट
मेरे पास सिगरेट का लाइटर
आओ, तुम्हारी सिगरेट जला दूं
एक बहुत गहरी साँस लेना
और फिर इसका ख़ुमार देखना
रूह लरज़ जायेगी
पर झूम उठेगा
और सारी दुनिया
नाचीज़ नज़र आयेगी

तेरे बुज़ुर्ग,
पगड़ी बदलते थे
हुक्का बदलते थे
अँगूठी बदलते थे
मेरे बुज़ुर्ग
घास की गाँठ बदलते थे
लहू का चुल्लू बदलते थे
यह सभी दोस्ती के चिह्न थे

असी होठा दे झूठ बदलागे
होठ मेरे झूठ तेरे
होठ तेरे झूठ मेरे
इह दोस्ती दी नवीं रसम है
ते नवी रसम नू
वेखण दा नवा नुकता है
इश्कीआ गज़ला पुराणी बात है
इह नफरत दी गज़ल दा
इक वडा नवा मकता है

पुराणे दोसता दा फिक्र काहदा
विदा कर खुदा हाफिज़ आख के
सिरफ हथिआर रख लै
पुराणे दोस्त दी
पुराणे वक्त दी
इक प्यारी निशानी समझ के

ते एस खुशी विच्च
हमसाइआ नू बुला
जग दी चौपट विछा
हत्थ तेरे
टक गोलीआ—नरदा बिगानीआ
ते चाल मेरी

अजीब खेड है शतरज दी
मेरे दोस्त !
इह खेड दा नवीन करण है

हम होठों के झूठ बदलेंगे
होठ मेरे, झूठ तेरे
होठ तेरे, झूठ मेरे
यह दोस्ती की नयी रस्म है
और नयी रस्म को
देखने का नया नुक्ता है
इश्किया गजलें पुरानी बात है
यह नफरत की ग़ज़ल का
एक नया मकता है

पुराने दोस्तों का गम कैसा
विदा कर दे
खुदा हाफिज़ कहकर
सिर्फ हथियार रख ले
पुराने दोस्त की
पुराने वक्त की
एक प्यारी निशानी समझकर

और इस खुशी में
हमसाये को आवाज़ दे
जग की शतरंज खेल
हाथ तेरे
टैंक तोपें मोहरे बेगाने
और चाल मेरी

अजीब खेल है शतरंज का
मेरे दोस्त!
यह खेल का नवीनीकरण है

दोस्तो !

(17 सितम्बर, 1965)

रात दा उलाभा
कि दिहुँ जाण लग्गा सी
मेरी दहलीज टप्प के
मुठ तारे चुरा के लै गया

दिहुँ दा शिकवा
कि रात जाण लग्गी सी
मेरी दहलीज टप्प के
मुठ किरना चुरा के लै गई

हाठ चादी दे कौल सन
मिसरी दा टोटा घोल के
फेर रात मुसकराई
ते दिहुँ गुडकिआ
तारा कोई घटिआ नही
किरना दा कुछ नही बिगडिआ

भेडा दी चोरी
चरवाहिआ दी चोरी
बदूका दी चोरी
सिपाहीआ दी चोरी

इह कहीआ चोरीआ ने दोस्तो !
इलजाम ने केहो जहे !
ते राजनीती दे हत्थ विच्च
इह जाम ने केहो जहे !

जो वेहडा सजाये जग्ग दा
उस हुसन दी चोरी करो
जो काइदा सिखाये अदब दा
उस इश्क दी चोरी करो

दोस्तो !
(17 सितम्बर 1965)

रात का शिकवा
कि दिन जाने को था
मेरी दहलीज़ पार करके
मुट्ठी भर सितारे चुराकर ले गया

दिन का शिकवा
कि रात जाने को थी
मेरी दहलीज पार करके
मुट्ठी भर किरणें चुराकर ले गयी

हाठ चांदी के कटोर थे
मिसरी का एक टुकडा घोल कर
फिर रात मुसकरायी
और दिन हँस दिया
सितारा कोई कम नही
किरणें पूरी की पूरी थी

भेडा की चोरी
चरवाहो की चोरी
बदूका की चोरी
सिपाहियो की चोरी

यह कैसी चोरियाँ है दोस्तो
यह इलज़ाम कैस हैं !
और राजनीति के हाथ मे
यह जाम कस हैं !

जो दुनिया का आगन सजाये
उस हुस्न की चोरी करो
जा अदब के कायदे सिखाय
उस इश्क की चोरी करो

जा इनम बनाए जीउन ना
उस इनम दा चारा करो
जा जिनमत निउे इनसान दी
उस इनम नी चारी करो

नि दा दहलीज़ म्प के
बाहुता दा बूहा लाहन वे
मह दौलत चुराओ
होठ नानी द बोल न
मिारा दा टोना घोत व
बो. ऊन लाओ

ह दौलता न सारआं
अ चोरी करो
ता चोराआ मुबारक
वे ऊजा लाओ
तां ऊजा वी प्यारआं

इक खत

चन्न सूरज दो दवाता
कलम ने डोबा लिआ
लिखतम तमाम धरती
पढतम तमाम लोक

हुक्मराना दोस्तो
मानोना, बदूका ते टैन्क
नम तो पहिनां
इह हन दड लहो

जो जीने की रस्म चलाये
उस इल्म की चोरी करो
जो इन्सान की किस्मत लिखे
उस कलम की चोरी करो

दिल की दहलीज पार कर
बाहों के किवाड़ खोलकर
यह दौलत चुराओ
होंठ चाँदी के कटोरे हैं
मिसरी का टुकड़ा घोलकर
कोई तोहमत लगाओ !

ये सभी दौलतें हैं
अगर चोरी करो
तो सब चोरियाँ मुबारक !
अगर तोहमत लगाओ
तो सब तोहमतें प्यारी हैं।

एक खत

चाँद सूरज दो दवातें
कलम ने डोबा लिया
लिखतम तमाम धरती
पढ़तम् तमाम लोग

हुक्मराना दोस्तो
गोलियाँ बन्दूकें और एटम
चलाने से पहले
इस खत को पढ़ लेना

जो रसम चलाये जीऊण दी
उस इलम दी चोरी करो
जो किसमत लिखे इनसान दी
उस कलम दी चोरी करो

दिल दी दहलीज़ टप्प के
बाहवा दा बूहा खोहल के
इह दौलत चुराओ
होठ चादी दे कौल ने
मिसरी दा टोटा घोल के
कोई ऊज लाओ

इह दौलता ने सारीआ
जे चोरी करो
ता चारीआ मुबारख
जे ऊजा लगाओ
ता ऊजा वी प्यारीआ

इक खत

चन सूरज दो दवाता
कलम ने डोबा लिआ
लिखतम तमाम धरती
पढतम तमाम लोक

हुकमराना दोस्तो
गोलीआ, बदूका ते ऐटम
चलाण तो पहिला
इह खत पढ लवो

जो जीने की रस्म चलाये
उस इल्म की चोरी करो
जो इन्सान की किस्मत लिखे
उस कलम की चोरी करो

दिल की दहलीज पार कर
बाहों के किवाड खोलकर
यह दौलत चुराओ
होठ चाँदी के कटोरे हैं
मिसरी का टुकडा घोलकर
कोई तोहमत लगाओ !

ये सभी दौलतें हैं
अगर चोरी करो
तो सब चोरियाँ मुबारक !
अगर तोहमत लगाओ
तो सब तोहमतें प्यारी हैं।

एक खत

चाँद सूरज दो दवातें
कलम ने डोबा लिया
लिखतम तमाम धरती
पढतम् तमाम लोग

हुक्मरानो दोस्तो
गोलियाँ, बन्दूकें और एटम
चलाने से पहले
इस खत को पढ लेना

साइंसदानो दोस्तो
गोलीआ, बदूका ते ऐटम
बनाण तो पहिला
इह खत पढ लवो

सितारिआ दे हरफ
ते किरना दी बोली
जो पढनी नही अऊंदी
किसे आशक-अदीब तो पढवा लवो
अपनो किसे महबूब ता पढवा लवो
त हर इक मा दी इह मात बोली है
घडी कु बैठ जावो किसे वी था'ते
ते खत पढवा लवो किसे वी मा ता

ते फेर आवो मिलो
कि मुलका दी हद्द जित्थे है
इक हद्द मुलक दी
ते मेच के वेखो
इक हद्द इलम दी
इक हद्द इशक दी
ते फेर दसणो कि किस दी हद्द कित्थे है !

चन्न सूरज दो दवाता
अज इक डोबा लवो
ते एस खत दी पहुँच देवो
ते दुनीआ दी सुख साद दे
दो अक्खर वी पा दिओ

तुहाडी—आपनी धरती
तुहाडा खत उडीकदी
बडा फिकर करदी पई।

साइसदानो, दोस्तो
गोलियाँ, बन्दूकें और एटम
बनाने से पहले
इस खत को पढ लेना

सितारो के हरफ
और किरनो की बोली
जो पढनी नही आती
किसी आशिक—अदीब से पढवा लेना
अपनी किसी महबूब स पढवा लेना
और हर एक माँ की यह 'मात-बोली' है
तुम बैठ जाना किसी भी ठाव
और खत पढवा लेना किसी भी मा से

फिर आना और मिलना
कि मुल्क की हद जहाँ है
एक हद मुल्क की
और नाप कर देखो
एक हद इलम की
एक हद इश्क की
और फिर बताना कि किसकी हद कहाँ है

चाँद सूरज दो दवातें
हाथ मे एक कलम लो
इस खत का जवाब दो
और दुनिया की सुख-सार के
दो हरफ भी डाल दो

तुम्हारी-अपनी धरती
तुम्हारे खत की राह देखती
बहुत फिकर कर रही